Chapter - 10

दशम अध्याय

गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व की व्यापकता एवं वैशिष्ट्य

प्राक्कथन

पूर्व अध्याय में आचार्य शब्द की जिस प्रकार व्याख्या की गयी है, उसके अनुसार किसी भी विषय पर शास्त्र ग्रंथ लिखने वाले व्यक्ति को आचार्य कहा जा सकता है। हिन्दी साहित्य में हिन्दी के उन कवियों या लेखकों को ही आचार्य कहा जाता है जिन्होंने सृजनात्मक साहित्य के साथ साथ काव्यशास्त्र के विषय में भी कुछ लिखा है। परन्तु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में आचार्य शब्द का यह अर्थ स्वीकृत नहीं किया गया है तथा शास्त्रकार को आचार्यत्व का प्रधान मानदंड माना गया है, जिसके अनुसार काव्यशास्त्र के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों के विषय में लिखने वाले लेखकों को भी आचार्य कहा जा सकता है। गोविन्द गिल्ला भाई ने, जैसा कि पूर्व अध्याय में स्पष्ट किया जा चुका है, काव्यशास्त्र के अतिरिक्त कवि शिक्षा, नीति शास्त्र, भक्ति शास्त्र, व्याकरण, कोष आदि के विषय में तो लिखा ही है, साथ ही उन्होंने कुछ अपने तथा कुछ अन्य कवियों के ग्रंथों पर टीकायें लिखी हैं, कुछ संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद किया है तथा प्राचीन हिन्दी साहित्य के विषय में मूलभूत शोध कार्य भी किया है। वस्तुत: यह सब कुछ उनके आचार्यत्व के अंतर्गत ही आता है। परन्तु यह उनके आचार्यत्व का मूल

रूप नहीं कहा जा सकता है और न प्रधान रूप ही । क्योंकि मूलत: कवि होनेके कारण, मूलत: वे काव्य शास्त्र के आचार्य हैं, और काव्यशास्त्र के विषय में ही उन्होंने प्रधान रूप से लिखा है, अत: उनके आचार्यत्व के उक्त पक्षों को उनके आचार्यत्व का विस्तार माना जा सकता है । इसीलिए प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन को गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व की व्यापकता नाम दिया गया है ।

आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई मूलत: रीति आचार्य हैं, परन्तु उनके आचार्यत्व में जिस प्रकार काव्यशास्त्र से संबंद्ध कुछ अन्य शास्त्रों का अस्तित्व दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार आधुनिक काल की परिसीमा में उत्पन्न होने के कारण उनके आचार्यत्व में कुछ आधुनिक आचार्यत्व की झलक भी मिलती है, विशेष कर ग्रंथ संपादन प्रकाशन और शोध कार्य में । गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व के उक्त रूपों का अध्ययन करने से पूर्व यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि उनके आचार्यत्व के उक्त रूपों से संबद्ध सामग्री पूर्णत: उपलब्ध नहीं है, साथ ही जितनी उपलब्ध है उसमें से थोड़ी ही ग्रंथ रूप में है, शेष सामग्री स्फुट हस्तलिखित कागज पत्रों के रूप में है, अत: उपलब्ध सामग्री के आधार पर गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व के उक्त रूपों का सविस्तार अध्ययन नहीं किया जा सकता । जो भी सामग्री उपलब्ध है उसके आधार पर उनके आचार्यत्व के शेष अंगों का संक्षिप्त अध्ययन ही किया जा रहा है।

अत: निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत अध्याय का अध्ययन क्रम निश्चित किया जा सकता है :

१। गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व की व्यापकता ।
१।१ गोविन्द गिल्ला भाई का कवि शिक्षा विवेचन ।
१।२ गोविन्द गिल्ला भाई का नीति शास्त्र विवेचन ।
१।३ गोविन्द गिल्ला भाई का भक्ति शास्त्र विवेचन ।
१।४ गोविन्द गिल्ला भाई का हिन्दी कोश और व्याकरण विवेचन ।
२। गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व का वैशिष्ट्य ।
२।१ गोविन्द गिल्ला भाई की टीकाएं ।

२।२ गोविन्द गिल्ला भाई का अनुवाद कार्य ।
२।३ गोविन्द गिल्ला भाई का संग्रह कार्य ।
२।४ गोविन्द गिल्ला भाई का शोध कार्य ।
२।५ गोविन्द गिल्ला भाई का संपादन आदि कार्य ।
३। उपसंहार ।

१। गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व की व्यापकता

पूर्व अध्याय में हिन्दी आचार्यों का वर्गीकरण करते हुए स्पष्ट किया जा चुका है कि गोविन्द गिल्ला भाई हिन्दी के उन आचार्यों में से हैं जिन्होंने काव्यशास्त्र के साथ साथ काव्यशास्त्र से संबद्ध अन्य शास्त्रों पर भी रचना लिखी हैं । हिन्दी में ऐसे अनेक आचार्य मिलते हैं जिन्होंने काव्यशास्त्र के साथ साथ कवि शिक्षा, संगीत, वाद्य, नृत्य, नाट्य, कोष आदि विषयों पर भी रचनायें की हैं । गोविन्द गिल्ला भाई ने भी काव्यशास्त्र के साथ साथ कवि शिक्षा, नीति, भक्ति, कोष, व्याकरण के विषय में भी लिखा है । नीति और भक्ति को उस अर्थ में काव्यशास्त्र से सम्बद्ध विषय नहीं कहा जा सकता है जिस अर्थ में कवि शिक्षा, कोष, व्याकरण आदि को कहा जा सकता है । परन्तु मध्यकालीन हिन्दी काव्य परम्परा को देखते हुए इन विषयों को भी काव्यशास्त्र से नहीं तो काव्य से सम्बद्ध तो कहा ही जा सकता है । भारतीय काव्य परम्परा में भी इन विषयों का महत्व प्राचीन आचार्यों ने स्वीकृत किया है । आचार्य भामह ने इसीलिए निम्नलिखित शास्त्रों को 'काव्य योनय:' नाम दिया है :

> व्याकरण, छंद शास्त्र, इतिहास, लोक व्यवहार, तर्क, न्याय और ~~सत्यकला~~ शल्कला [1] ।

१- तुलनीय है : अलंकार पीयूष, पूर्वार्ध - डा० रामशंकर रसाल, पृ० १२ ।

आचार्य वामन ने उक्त सूची में निम्नलिखित शास्त्रों को और बढ़ा दिया है :

चरित्र शास्त्र, रस सिद्धान्त, अर्थशास्त्र, नीति शास्त्र और कोष ।[१]

आशय यह कि भारतीय काव्य और शास्त्र परम्परा को दृष्टि में रखते हुए उन शास्त्रों को काव्य शास्त्र से संबद्ध माना जा सकता है जिनका विवेचन गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने काव्य शास्त्र के विवेचन से अतिरिक्त किया है ।

गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व के विवेचन में यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि, यद्यपि उन्होंने काव्यशास्त्र के अतिरिक्त उक्त अन्य शास्त्रों का विवेचन किया है, परन्तु उन्हें तत्त शास्त्रों का आचार्य नहीं कहा जा सकता । क्योंकि न तो उन्होंने इन शास्त्रों का विवेचन ही विस्तार से किया है और न ही इन शास्त्रों का विवेचन उनका मूल प्रयोजन था । वस्तुत: ये शास्त्र काव्य रचना में सहायक होते हैं तथा काव्य शास्त्र के साथ उनका निकट का सम्बन्ध है, इसीलिए उन्होंने इन शास्त्रों का विवेचन किया है । आशय यह कि उन्होंने इन शास्त्रों का विवेचन इन शास्त्रों के विवेचन के लिए नहीं किया, वरन् इन शास्त्रों का विवेचन काव्य शास्त्र के उपकारक शास्त्रों के रूप में किया है । अत: गोविन्द गिल्ला भाई को मूलत: रीति आचार्य कहा गया है, परन्तु उन्होंने काव्यशास्त्र के अतिरिक्त काव्यशास्त्र से संबद्ध अन्य शास्त्रों का भी विवेचन किया है, अत: उनका रीति आचार्यत्व रीतिकाल के उन आचार्यों के समान सीमित या संकुचित नहीं कहा जा सकता, जिन्होंने केवल काव्य शास्त्र का विवेचन पूर्णत: या अंशत: किया है । आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व मूलत: रीति आचार्यत्व है परन्तु वह अनेक रीति आचार्यों की तुलना में अधिक व्यापक है ।

१- तुलनीय है : अलंकार पीयूष ,पूर्वार्ध - डा० रामशंकर रसाल, पृ० १२ ।

गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व की व्यापकता का स्वरूप तथा सीमाएं उनके काव्य शास्त्रेतर शास्त्रों के विवेचन से स्वत: ही स्पष्ट हो जायेंगी, अत: उसमें यहां विशेष कुछ नहीं कह कर उनके काव्य शास्त्रेतर ग्रंथों का ही अध्ययन किया जा रहा है।

१।१ गोविन्द गिल्ला भाई का कवि शिक्षा विवेचन

काव्य शास्त्र का मूल विषय काव्य ही है, परन्तु उसके हेतु आदि के विवेचन में जैसे शास्त्रकार की दृष्टि कवि पर रहती है, और काव्य के आस्वाद आदि के विवेचन में उसकी दृष्टि काव्य के उपभोक्ता वर्ग या समाज पर रहती है, उसी प्रकार काव्य के स्वरूप, सौन्दर्य आदि के विवेचन में उसकी दृष्टि केवल काव्य पर ही रहती है। संस्कृत तथा हिन्दी के आचार्यों ने इस प्रकार अत्यंत वैज्ञानिक दृष्टि से काव्य समीक्षा के लिए सुदृढ़ सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत कर दिया है। परन्तु केवल कवि को और काव्य रचना के लिए आवश्यक उसकी योग्यता को दृष्टि में रख कर भी अनेक आचार्यों ने अपने काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में अथवा स्वतंत्र रूप से, विशुद्ध व्यावहारिक दृष्टि से कवि शिक्षा नाम से अभिहित किया जाने वाला प्रभूत साहित्य भी लिखा है। संस्कृत के आचार्यों में भामह, वामन आदि आचार्य ऐसे हैं जिन्होंने स्वतंत्र रूप से कविशिक्षा के ग्रंथ नहीं लिखे परन्तु सामान्यत: कवि शिक्षा के ग्रंथों में आने वाले अनेक विषयों की उन्होंने चर्चा की है।[१] उदाहरणार्थ भामह ने अपने काव्यालंकार में लिखा है कि कवि को शब्दार्थ का ज्ञान प्राप्त कर शब्दार्थ वेत्ताओं की सेवा कर तथा अन्य कवियों के निबन्धों को देखकर काव्य क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिए।[२] इसी प्रकार वामन ने अपने काव्यालंकार सूत्र में कवि के लिए लोक व्यवहार, शब्दशास्त्र, अभिधान कोश, छंदशास्त्र, कला, काम शास्त्र, काव्य शास्त्र, नीति आदि का ज्ञान आवश्यक

१- तुलनीय है : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० २०८।

२- ,, : काव्यालंकार - भामह १।१०।

बताया है।[१] सामान्यत: इनविषयों का सविस्तार वर्णन कवि शिक्षा के ग्रंथों में ही मिलता है। संस्कृत में राजशेखर, क्षेमेन्द्र, अमरचंद्र, देवेश्वर केशव मिश्र आदि अनेक आचार्य मिलते हैं जिन्होंने कवि शिक्षा के विषय में विशेष रूप से लिखा है।[२]

हिन्दी में अब तक जो साम्ग्री प्रकाश में आयी है उसके आधार पर[३] यही कहा जा सकता है कि हिन्दी में कवि शिक्षाकार आचार्य अधिक नहीं हुए। परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने कवि शिक्षा से सम्बन्धित ग्रंथों की साम्ग्री के स्रोत ग्रंथों की एक स्थान पर जो सूची दी है[४] उससे यही प्रतीत होता है कि कवि शिक्षा लेखन की परम्परा हिन्दी में संस्कृत से अधिक नहीं तो बराबर अवश्य विकसित हुई थी, जिसके विषय में अभी मूलभूत शोध कार्य किया जाना शेष है। परन्तु उपलब्ध साम्ग्री के आधार पर केशवदास को हिन्दी का प्रथम कवि शिक्षाकार कहा जा सकता है।[५] जिनकी परिपाटी[६] का अनुसरण जगन्नाथ प्रसाद भानु ने अपने ग्रंथ काव्य प्रभाकर में किया है। परन्तु रीति[७] काल के सम्पूर्ण काव्य साहित्य पर कवि शिक्षा के प्रत्यक्ष प्रभाव को देखते हुए, केशवदास और भानु जी के बीच कविशिक्षा कारों की समृद्ध परम्परा का अनुमान अवश्य किया जा सकता है।

गोविन्द गिल्ला भाई ने भूषण मंजरी और शृंगार षोडशी नामक दो ग्रंथ लिखे हैं जिनकी कवि शिक्षा के ग्रंथ कहा जा सकता है। उन्होंने इन रचनाओं का जो परिचय आदि दिया है उससे भी यही सिद्ध होता है कि उन्होंने इन रचनाओं को कवि शिक्षा के ग्रंथों के रूप में ही लिखा है।[८]

१- काव्यालंकार सूत्र - वामन १।३।१।११ ।

२- हिन्दी साहित्य कोश, पृ० २०८ ।

३- तुलनीय है : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० २०८ ।

४- ,, : गोविन्द गद्य साहित्य संग्रह, ह०प्र०सं०२०५, पृ०१०२ से १०४ ।

५- ,, : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० २०८ ।

६- ,, : वही, पृ० २०८ ।

७- ,, : वही, पृ० २०८ ।

८- ,, : गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० १४ ।

गोविन्द गिल्ला भाई ने हिन्दी कवि शिक्षा ग्रंथों की जो सूची दी है तथा उनके विषयों का जो विवरण दिया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने अपने ग्रंथों में हिन्दी कवि शिक्षा के ग्रंथों की परम्परा का ही अनुसरण किया है। साथ ही वे न केवल इस परम्परा से अच्छी तरह परिचित थे, वरन् उन्होंने इस परम्परा का गहन अध्ययन भी किया था। यहां उन कुछ ग्रंथों की नामावली दी जा रही है जिनका उल्लेख गोविन्द गिल्ला भाई ने किया है[१], तथा जिन ग्रंथों में से उन्होंने अपने ग्रंथों के लिए अपेक्षित सामग्री संकलित की थी।

भूषण मंजरी से सम्बद्ध ग्रंथों की सूची :

१- नखशिख - बलभद्र कृत।
२- रसरत्न।
३- शिखनख - रसिक मनोहर कृत।
४- तुलसी शब्दार्थ प्रकाश।
५- शृंगार सिन्धु।
६- प्रवीण सागर महेरामण सिंह कृत।
७- तुलसी कृत रामायण की सुखदेव कृत टीका।
८- शिवसिंह सरोज - शिवसिंह कृत।

शृंगार षोडशी से सम्बद्ध ग्रंथों की सूची[२] :

१- नर्मदाचार्य कृत कोकशास्त्र।
२- वस्तुवृंद दीपिका।
३- जसुराम कृत राजनीति।
४- कोकशास्त्र।
५- विभु विलास।
६- साहित्य सिन्धु।

१- तुलनीय है : गोविन्द गद्य साहित्य संग्रह ह०प्र०सं०२०५ पृ० १०४।
२- ,, : वही, पृ० १०२, १०३।

७- कवि प्रिया ।

८- रसिक प्रिया ।

९- कविप्रिया और रसिक प्रिया की सरदार कवि कृत टीका ।

१०- तुलसी शब्दार्थ प्रकाश ।

११- शिवसिंह सरोज ।

१२- रसिक मनोहर कृत शिखनख ।

१३- बलभद्र कृत शिखनख ।

१४- रस रत्न ।

१५- शृंगार सिन्धु ।

१६- प्रवीण सागर ।

१७- तुलसी कृत रामायण की सुखदेव कृत टीका ।

इन ग्रंथों की सूची से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने भूषण मंजरी में नायिका के आभूषणों तथा शृंगार षोडशी में नायिका के सोलह शृंगारों के विषय में लिखने से पूर्व इन विषयों से सम्बद्ध अनेक ग्रंथों का अध्ययन किया था । यहां यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा दी गयी ग्रंथों की सूची जिसमें से ऊपर कुछ नाम उद्धृत किये गये हैं, में कुछ ग्रंथ ऐसे हैं जो अप्राप्य हैं और कुछ अज्ञात । परन्तु इन ग्रंथों के अस्तित्व के विषय में किसी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती/ क्योंकि इन ग्रंथों में आये नायिका के बारह भूषण और सोलह शृंगारों की नामावली भी कवि ने दी है,[१] जो कुछ अपवादों के साथ सभी ग्रंथों में समान कही गयी है ।[२] इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई उक्त ग्रंथों के लिखने से पूर्व उनके विषयों से सम्बद्ध साहित्य से न केवल परिचित थे, वरन् उन्होंने उसका तुलनात्मक अध्ययन भी किया था । परन्तु उन्होंने किसी ग्रंथ विशेष का अपने ग्रंथों में अन्धानुकरण नहीं किया है, वरन् अपने विषय को अच्छी तरह

१- गोविन्द गद्य साहित्य संग्रह ह०प्र०सं० २०५, पृ० १०२ से १०५ ।

२- वही ।

हृदयंगम कर अपना मत स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है। यह बात न केवल भूषण मंजरी और शृंगार षोडशी के अध्ययन से स्पष्ट होती है वरन् अन्यत्र टिप्पणी रूप में इन ग्रंथों के विषय की चर्चा से भी सिद्ध हो जाती है जिसका कुछ अंश यहां उद्धृत किया जा रहा है :

शृंगार सजवा, पेहेरवा करवा कहेवाय छे, अर्थात् शृंगार सजवा थी थाय छे। त्यां चितवनि, चलन, बोलन आदि शृंगार सजाता नथी। एटले पेहेराता नथी, माटे ए शृंगार-गणाय नहिं। केम के शृंगार तो चढे अने उतरे छे। अने बोलन, चितवनि, हसन आदि चढता उतरता न थी। माटे ते शृंगार मां गणाय नहिं, पण ते बोलन, चितवनि, चलन, हसन, आदि सर्वे स्वभाव ना गुण छे, ते थी ए स्वभाविक गणाय, पण सोण शृंगार मां गणाय नहिं।[1]

(शृंगार सजने के लिए, पहिनने आदि के लिए कहा जाता है। अर्थात् शृंगार सजने से होता है। जबकि चितवनि, चलन, बोलन आदि शृंगार सज नहीं जाते। इसलिए पहिने नहीं जाते। अत: ये शृंगार नहीं कहे जाते। क्योंकि शृंगार तो चढता और उतरता है। और बोलन चितवनि, हसन आदि नहीं चढते उतरते। इसलिए उन्हें शृंगार में नहीं गिना जा सकता। परन्तु ये बोलन, चितवनि, चलन, हसन आदि सब स्वभाव के गुण हैं, अत: उन्हें स्वाभाविक माना जाता है परन्तु सोलह शृंगार में नहीं गिना जा सकता)।

भूषण मंजरी गोविन्द गिल्ला भाई की ऐसी कृति है जिसमें उन्होंने नायिका के बारह आभूषणों का शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन किया है। प्रस्तुत रचना की विवेचन शैली भी वैसी ही है जैसी कि उनके काव्य शास्त्रीय ग्रंथों की है। अर्थात् पहले अपने विषय का लक्षण दिया है, और फिर उदाहरण।

१- गोविन्द गद्य साहित्य संग्रह ह०प्र०सं० २०५, पृ० १०३।

नायिका के बारह आभूषणों के लक्षण उदाहरण देने से पूर्व गोविन्द गिल्ला भाई ने भूषण का एक सामान्य लक्षण दिया है और बारह भूषणों के बारह स्थानों का वर्णन किया है[1]। बारह भूषणों के स्थानों का उल्लेख उन्होंने इस प्रकार किया है :

शीश मांग अरु भाल, श्रुति नाशा गर भुज पान।
कटि मुरवा युग आंगुरी बारह भूषण स्थान[2]।

गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने इस ग्रंथ में इस बात की भी चर्चा की है कि नायिका के बारह भूषण ही क्यों कहे जाते हैं[3], तथा एक आभूषण स्थान पर अनेक आभूषण पहिने जाते हैं फिर भी उन्हें एक ही आभूषण क्यों गिना जाता है[4]। नायिका के शरीर में उक्त बारह स्थान ही आभूषण धारण करने के योग्य होते हैं, अत: उन्हीं बारह स्थानों के अनुसार बारह भूषण कहे जाते हैं, यद्यपि एक स्थान पर अनेक आभूषण धारण किये जा सकते हैं[5]। आगे कवि ने उक्त बारह भूषणों के सुस्पष्ट लक्षण उदाहरण दिये हैं[6]।

कुछ आचार्यों ने उक्त बारह भूषणों में से कुछ भूषणों को भूषण नहीं कहा है क्योंकि उनकी परिगणना सोलह शृंगारों के अंतर्गत भी की गयी है। गोविन्द गिल्ला भाई ने इस मत का उल्लेख किया है[7], और उसके साथ अपनी सहमति भी प्रगट की है। इसीलिए उन्होंने आगे इस दृष्टि से नायिका के बारह भूषणों का वर्णन प्रस्तुत किया है जो प्रसाधन मूलक है[8], उनके अनुसार नायिका के बारह भूषण इस प्रकार हैं :

१- गोविन्द ग्रंथमाला पृ०२३५, भूषण मंजरी, छं० ३,७।
२- वही, पृ०२३५ छं० ७।
३- वही, पृ० २३५, छं० ४,५,६।
४- वही, पृ० २३६ छं० ८, ९, १०।
५- वही, पृ० २३६, छं० १०।
६- वही, पृ० २३७से २६७।
७- तुलनीय है : वही, पृ० २५७, २५८।
८- ,, : वही, पृ० २५८ छं० ८० से ८४।

१- अवगाहन, २- तैल धारन, ३- बार बनावन, ४- मांगभरन, ५- खौरिकरन, ६- बेंदोधारन, ७- अंजन, ८- ताम्बूल सेवन, ९- अंगरागलेपन, १०- सुवास, ११- मेंहदी, १२- जावक।[1]

जिस प्रकार भूषण मंजरी में नायिका द्वादश आभूषणों के विषय में उक्त दोनों मतों का स्पष्टत: विवेचन कर अपना स्वतंत्र मत व्यक्त किया है तथा अध्ययन की तुलनात्मक दृष्टि का परिचय दिया है, उसी प्रकार शृंगार षोडशी में नायिका के सोलह शृंगारों का सुस्पष्ट तुलनात्मक विवेचन किया है। उन्होंने शृंगार षोडशी में सर्वप्रथम नायिका के सोलह शृंगारों का सामान्य लक्षण दिया है,[2] तथा उनको अलंकारिक, आंगिक, और स्वाभाविक नाम से तीन भेद किये हैं।[3] जिनका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है :

सोलह अलंकारिक शृंगार :

मज्जन अंगजा केश बनावन चारु शिरोमनि बेंदि बिराजे।
अंजन और तरौन रु बेसर ताम्बुल हार हिया पर भ्राजे।
कंचुकि कंकन मेखला मंजिर चीर सुहावन चातुरी छाजे।
गोविंद सोइ सिंगारहि सोरह चाह धरी तनु सुन्दरी साजे।[4]

आंगिक सोलह शृंगार उन्होंने निम्नलिखित माने हैं :

१- बार सुकुमारता, २- भाल विशालता, ३- लोचन विशालता, ४- सिंघिनी सरलता, ५- ओष्ठ अरुनता, ६- दांत विमलता, ७- ग्रीव गुलाई, ८- कुच गाढता, ९-कुक्ष क्षीणता, १०- कटि क्षीणता, ११- नाभि गंभीरता, १२- नितम्ब स्थूलता, १३- उरु विलोमता, १४- करज कोमलता, १५- पगतल अरुनता, १६- देह कांति।[5]

१- तुलनीय है : गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० २५८ छं० ८० से ८४।
२- ,, : वही, पृ० २६८ छं० ३।
३- ,, : वही, पृ० २६८, छं० ४।
४- ,, : वही, पृ० २६९, छं० १३।
५- ,, : वही, पृ० २८३, छं० ६२।

स्वाभाविक सोलह शृंगारों का वर्णन इस प्रकार है -

"शुचिता सनेह शील चातुरी चितौं पुनि, चारुता सुवास,गौन गैंद अनुहार हैं।
बोलन हँसन हिय धीरज धरन पुनि,कोकिल से कंठ कल नेक निरधार हैं ।
कोमल शरीर चित्त लाज में बिराजमान, विनय वलित वर इंगित अपार हैं ।
गोविंद कहत ऐसें योषिता के अंगन में शोहत स्वभाविक ये सोरह सिंगार हैं।[1]

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने केवल अलंकारिक शृंगारों का ही सविस्तार वर्णन किया है अन्य प्रकार के शृंगारों का केवल नाम कथन ही किया है और एक ही छंद में उनके एकत्र उदाहरण दे दिये हैं[2]।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने कवि शिक्षा की हिन्दी परम्परा का गहन अध्ययन किया था, परन्तु उन्होंने कवि शिक्षा के अधिक विषय पर कुछ न लिख कर केवल नायिका भेद के पूरक अंश नायिका के भूषण और शृंगारों का ही सविस्तार विवेचन किया है । अपने विवेचन में उन्होंने तुलनात्मक दृष्टि का परिचय दिया है तथा विवेचन इतनी सुस्पष्ट शैली में किया है कि उसको समझने के लिए किसी टीका आदि की आवश्यकता नहीं होती । रीतिकाल की लक्षण उदाहरण की शास्त्र विवेचन की शैली में ही उन्होंने अपने दोनों ग्रंथों में उक्त विषयों का विवेचन किया है ।

१।२ गोविन्द गिल्ला भाई का नीति शास्त्र विवेचन

हिन्दी में नीति काव्य शब्द अत्यधिक जाने पहिचाने हैं, परन्तु नीति शास्त्र का विशेष प्रयोग समीक्षा ग्रंथों में नहीं मिलता । डा० भोलानाथ तिवारी ने अपने शोध प्रबन्ध में हिन्दी नीति काव्य में नीति शब्द की व्याख्या, नीति काव्य का काव्यत्व तथा नीति काव्य का वर्गीकरण आदि किया है, परन्तु उन्होंने

१- तुलनीय है : गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० २८४,छं० ६४ ।
२- ,, : वही, पृ० २८३, २८४ ।

नीति काव्य और नीति शास्त्र के भेद को कहीं भी स्पष्ट करने का प्रयास नहीं किया । विज्ञ लेखक का मूल विषय नीति काव्य ही था अत: उनसे इस प्रकार की कोई अपेक्षा नहीं की जा सकती । परन्तु संस्कृत नीति साहित्य का विवेचन करते हुए उन्होंने नीति शास्त्र और नीति काव्य के ग्रंथों का अध्ययन एक ही शीर्षक के नीचे कर संस्कृत साहित्य के लिए अनिवार्य नीति शास्त्र और नीति काव्य के भेद को और भी अधिक अस्पष्ट कर दिया है[१]। संस्कृत में शुक्र नीति, चाणक्य नीति, चाणक्य अर्थशास्त्र तथा स्मृति ग्रंथों को संस्कृत के आचार्यों ने तो काव्य संज्ञा से अभिहित किया ही नहीं है, आधुनिक विचारक भी इन रचनाओं को काव्य नहीं कह सकते। इसी प्रकार भर्तृहरि आदि के नीति विषयक काव्यों को शास्त्र नहीं कहा जा सकता । आशय यह कि नीति के सामान्य विषय के आधार पर किसी भी रचना को नीति काव्य नहीं कहा जा सकता । रचना के रूप, शैली, गुण आदि के आधार पर उनको काव्य और शास्त्र की या ऐसी ही किन्हीं कोटियों में बांटा जाता है । अत: नीति काव्य और नीति शास्त्र के भेद को अनिवार्यत: स्वीकार करना पड़ता है ।

भारतीय साहित्य में आदि काल से ही नीति विषयक साहित्य मिलता है[२], जो मूलत: दो प्रकार का है - १- नीति काव्य, २- नीति शास्त्र । हिन्दी में अब तक प्रथम प्रकार के साहित्य का ही अध्ययन हुआ है, जिसे विद्वानों ने उपदेश, अन्योक्ति तथा सूक्ति[३], अथवा शैली के अनुसार कुछ भिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है[४]।

संस्कृत के समान ही हिन्दी में भी अत्यन्त प्राचीन काल से तथा प्रभूत मात्रा में नीति विषयक साहित्य मिलता है । दसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक

१- तुलनीय है : हिन्दी नीति काव्य - डा० भोलानाथ तिवारी, पृ० ३७ से ३८ ।
२- ,, : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ४२० ।
३- ,, : वही, पृ० ४२१ ।
४- ,, : हिन्दी नीति काव्य - डा० भोलानाथ तिवारी, पृ० ६३ ।

के शतश: नीति विषयक ग्रंथों का विवरण प्राप्त हो चुका है[१]। परन्तु इस समूचे साहित्य के प्रत्यक्ष परिचय के बिना यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें कितना साहित्य काव्य साहित्य है और कितना शास्त्र साहित्य है।

परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई ने जो नीति विषयक साहित्य लिखा है वह दोनों प्रकार का है। उनके नीति काव्य के विषय में पहले विचार किया जा चुका है। अब उनके नीति शास्त्र के विषय में विचार किया जा सकता है। गोविन्द गिल्ला भाई की एक रचना लक्षण बत्तीसी ऐसी रचना है जिसे नीति शास्त्र की रचना कहा जा सकता है, क्योंकि न केवल इस ग्रंथ की रचना, विषय निरूपण और शैली आदि ही शास्त्रीय हैं, वरन् इसमें कवि की दृष्टि भी शास्त्र परक है। गोविन्द गिल्ला भाई ने इस रचना के विषय में लिखा है कि, वामें संस्कृत ग्रंथ वृद्ध चाराक्य, नीति दर्पण, के षष्टवां अध्याय में बत्तीश लक्षण के श्लोको देख कें और भाषा में फुटकर लक्षणो देखकें उन पर से यह लक्षण बत्तीसी ग्रंथ बनाया है।[२] इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने संस्कृत के नीति शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार ही मूलत: प्रस्तुत ग्रंथ लिखा है। परन्तु उन्होंने हिन्दी के भी इसी प्रकार के ग्रंथों का सहारा लिया है, जिससे यही सिद्ध होता है कि हिन्दी में भी नीति काव्य के साथ साथ नीति शास्त्र लेखन की परम्परा भी थी। लक्षण बत्तीसी में गोविन्द गिल्ला भाई ने सर्वप्रथम वृद्ध चाणक्य के अनुसार सिंह और बक के एक एक गदहा के तीन, मुर्गा के चार, कौवा और राजा के पांच, पांच, कुत्ता के छह, और मयूर के सात नीति मूलक लक्षणों का वर्णन किया है,[३] और फिर हिन्दी के लेखकों के मतानुसार सिंह, बक, मोर, मीन, माली, मराल, मृग, कोकिल, लुहा, घूंस के एक एक गदहा के तीन, कुक्कुट और मंत्री के चार चार, कौवा के पांच और श्वान के छह नीतिमूलक लक्षणोंका

१- तुलनीय है : हिन्दी नीति काव्य - डा० भोलानाथ तिवारी, पृ० १२ से २२।

२- ,, : गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० १४।

३- ,, : गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० १४२ से १४४ छं० १से१४।

वर्णन किया है।[१] इसके पश्चात उन्होंने सामुद्रिक के अनुसार शरीर के बत्तीस लक्षणों का वर्णन किया है।[२] इस प्रकार गोविन्द गिल्ला भाई ने संस्कृत नीतिकार आचार्यों, हिन्दी के नीतिकार आचार्यों तथा सामुद्रिक शास्त्र के आचार्यों के अनुसार बत्तीस लक्षणों का वर्णन किया है। यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उन्होंने इस बात का उल्लेख भी अपनी रचना में किया है।[३]

प्रस्तुत रचना अपने विषय की संकुचितता तथा मौलिकता आदि की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं कही जा सकती, परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त शास्त्रीय रचनाओं में सर्वप्रथम होने के कारण इसका ऐतिहासिक मूल्य अवश्य है। क्योंकि इससे सिद्ध होता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व प्रारम्भ से व्यापक था और उनमें शास्त्र विवेचन की प्रवृत्ति भी प्रारम्भ से ही थी।

१।३ गोविन्द गिल्ला भाई का भक्तिशास्त्र विवेचन

भक्ति का शास्त्रीय विवेचन निश्चित ही भक्ति के भगवद् प्राप्ति या मोक्ष के एक साधन के रूप में स्थापित हो जाने के पश्चात ही हुआ होगा। भारतीय साधना के इतिहास में भक्ति की स्वीकृति तथा स्थापना के समय के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। विद्वानों ने ऋग्वेद के वरुण के सूक्तों में भक्ति के अंकुर माने हैं।[४] इसी प्रकार छान्दोग्योपनिषद्, मुंडकोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् आदि उपनिषदों में तथा श्रीमद् भगवद् गीता तथा महाभारत के शांति पर्व आदि प्राचीन ग्रंथों में भक्ति का विवेचन मिलता है।[५] परन्तु भक्ति का विशुद्ध शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन पांचरात्र संहिता, सात्वत् संहिता, शांडिल्य सूत्र, नारदीय भक्ति सूत्र तथा नारद पांचरात्र आदि ग्रंथों में ही सर्वप्रथम माना

१- गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० १४४ से १४६ छं० १५ से २५।

२- वही, पृ० १४६ से १४७ छं० २६।

३- वही, पृ० १४४ छं० १३, १४।

४- तुलनीय है : ऋग्वेद ४।१६।६, ७।८८,६ आदि।

५- ,, : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ५२४, ५२५।

जाता है[१]। शंकराचार्य केपश्चात् वैष्णव आचार्यों ने भक्ति का सविस्तार विवेचन किया और इसे मोक्ष का एक मात्र या प्रधानतम साधन माना । इन आचार्यों ने ही सर्वप्रथम भक्ति को रस नाम से भी अभिहित किया । भक्ति को रस रूप में स्वीकृत करने वाले आचार्यों में वल्लभ, मधुसूदन सरस्वती और रूप गोस्वामी आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । संस्कृत के प्रमुख काव्यशास्त्र के आचार्यों ने भक्ति को रस के रूप में स्वीकृत नहीं किया ।[२] आचार्य मम्मट ने सर्वप्रथम देव विषयक रति को भाव के रूप में माना है तथा पंडितराज जगन्नाथ ने भी इसकी चर्चा की है ।[३] परन्तु इन्होंने भक्ति को अन्य रसों के समान रस नहीं माना, अत: भक्ति रस के विवेचन का मूल स्रोत विद्वानों ने काव्यशास्त्र न मान कर भक्ति शास्त्र ही माना है ।[४] इसीलिए हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों ने भक्तिपरक या भक्ति प्रभावित काव्य-रचना करते हुए भी भक्ति को काव्य रस के रूप में स्वीकृत नहीं किया ।[५] हां आधुनिक काल के कुछ विद्वानों ने भक्ति को रस रूप में स्वीकृत किया है,[६] हरिऔध, कन्हैयालाल पोद्दार आदि ने भक्ति को काव्य रस माना है ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि भक्ति का शास्त्रीय विवेचन प्रधानत: संस्कृत में ही मिलता है, हिन्दी के भक्त कवियों ने भक्ति का यत्र तत्र विवेचन किया है परन्तु वह शास्त्रीय होते हुए भी शैली आदि की दृष्टि से भक्ति शास्त्र के रूप में स्वीकृत नहीं किया जा सकता । हां, आधुनिक कुछ आचार्यों ने भक्ति को रस मान कर उसका शास्त्रीय शैली में विवेचन किया है, जिसका प्रभाव गोविन्द गिल्ला भाई के भक्ति विवेचन पर भी स्पष्टत: देखा जा सकता है ।

१- हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ५२५ ।

२- वही, पृ० ५३० ।

३- वही, पृ० ५२५ ।

४- वही, पृ० ५३० ।

५- वही, पृ० ५३१ ।

६- वही, पृ० ५३२ ।

वैसे गोविन्द गिल्ला भाई ने भक्ति शास्त्र के संस्कृत ग्रंथों के समान ही भक्ति का विवेचन किया है, परन्तु उन्होंने हिन्दी के आधुनिक विद्वानों के समान भक्ति और रस के सम्बन्ध का स्पष्टत: निरूपण किया है और भक्ति को रस माना है[१]। काल क्रम की दृष्टि से गोविन्द गिल्ला भाई के हरिऔध और कन्हैयालाल पोद्दार के पूर्ववर्ती होने के कारण, उन्हें आधुनिक हिन्दी के आचार्यों में प्रथम कहा जा सकता है, जिन्होंने भक्ति को रस रूप में स्वीकृत कर उसकी शास्त्रीय विवेचना की है। इस प्रकार उनकी भक्ति शास्त्र की रचना भक्ति कल्पद्रुम में आधुनिकता की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

गोविन्द गिल्ला भाई ने अपनी संक्षिप्त रचना भक्ति कल्पद्रुम में भक्ति का सुस्पष्ट शास्त्रीय विवेचन किया है। उनके अनुसार मनसा वाचा कर्मणा प्रेम (चाह) पूर्वकईश्वर सेवा ही भक्ति है[२]। स्पष्ट है उन्होंने शांडिल्य के भक्ति लक्षण 'सा परानुरक्तिरीश्वरे[३]' तथा नारद के समान 'सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा अमृतस्वरूपा च' के अनुसार भक्ति के केवल मानसिक पक्ष को ही अपनी परिभाषा में स्थान देने के साथ साथ उसके व्यावहारिक पक्ष को भी समुचित स्थान दिया है। गोविन्द गिल्ला भाई ने संस्कृत भक्तिशास्त्र के कुछ ग्रंथों के अनुसार भक्ति को नवधा नहीं कहा है, उसको सर्वप्रथम उत्तम, मध्यम और अधम नामक तीन वर्गों में विभक्त किया है[४]। तथा इन्हीं तीनों को आगे क्रमश: निर्गुण भक्ति या पराभक्ति, सगुण भक्ति और नवधा भक्ति कहा है[५]। भागवत् में नवधा भक्ति इस प्रकार मानी गयी है :

श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम्[६]।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।

१- तुलनीय है : भक्ति कल्पद्रुम ह०प्र०सं० १५३ पृ०६ छं० ५७, ५८।
२- ,, : वही, पृ० ३ छंद १३, १४।
३- ,, : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ५२४, ५३१ पर उद्धृत।
४- ,, : भक्ति कल्पद्रुम ह०प्र०सं० १५२, पृ० ३ छं०सं० नहीं है।
५- ,, : वही, पृ० ३ छं० १५ से १८।
६- श्रीमद् भागवत ७।५।२३ ।

परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई ने उक्त नौ प्रकार की भक्ति को विष्णु से संबद्ध नहीं किया है तथा उसे अधम भक्ति कहा है।[१]

इसी प्रकार नारद भक्ति सूत्र में जैसे भक्ति को प्रेम स्वरूपा कहा है[२] और उस प्रेम स्वरूपा भक्ति की आदर्श ब्रजांगनाओं को माना है, वैसे ही गोविन्द गिल्ला भाई ने प्रेम लक्षणा भक्ति का वर्णन किया है[३] और 'ब्रज बनितान' को ही उन्होंने प्रेम लक्षणा भक्ति की आदर्श माना है। परन्तु उन्होंने इस प्रेम लक्षणा भक्ति को उत्तम भक्ति न मान कर मध्यम भक्ति माना है।[४] इस प्रकार गोविन्द गिल्ला भाई ने प्रेम लक्षणा भक्ति को मध्यम भक्ति कह कर मध्यकालीन वैष्णव कवियों तथा आचार्यों से अपना सैद्धान्तिक मतभेद स्पष्ट कर दिया है।

गोविन्द गिल्ला भाई ने पराभक्ति को उत्तम भक्ति कहा है[५]। शांडिल्य भक्ति सूत्र में जिस मुख्य भक्ति का उल्लेख[६] है, वह पराभक्ति ही है। गोविन्द गिल्ला भाई ने शांडिल्य के अनुसार[७] ही, पराभक्ति का लक्षण दिया है कि इसमें भक्त भगवान् में तदाकार हो कर[८] भी भगवान की सेवा करता रहता है और यही उसकी एकमात्र इच्छा होती है। यहां यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने पराभक्ति को निर्गुण भक्ति भी कहा है[९], परन्तु

१- तुलनीय है : भक्ति कल्पद्रुम ह०प्र०सं० १५२, पृ०३।

२- ,, : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ४६७।

३- ,, : भक्ति कल्पद्रुम ह०प्र०सं० १५३, पृ०७ छं० ४४।

४- ,, : वही।

५- ,, : वही, पृ०८ छं० ४६।

६- ,, : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ४३६।

७- ,, : वही, पृ० ४३६ पर शांडिल्य का उद्धृत सूत्र।

८- ,, : भक्ति कल्पद्रुम ह०प्र०सं० १५३, पृ०८ छं० ५०, ५१।

९- ,, : वही, पृ०३ छं० १५।

परन्तु पराभक्ति के विवेचन में भगवान के लिए हरि शब्द का ही प्रयोग किया है, जो हिन्दी में प्राय: सगुण ब्रह्म, विष्णु या कृष्ण के लिए ही प्रयुक्त होता है। आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई ने हरि शब्द का प्रयोग ईश्वर या ब्रह्म के लिए ही किया है, परन्तु यह प्रयोग हिन्दी की परम्परा के अनुकूल नहीं कहा जा सकता।

भक्ति के उक्त सामान्य विवेचन के पश्चात् गोविन्द गिल्ला भाई ने भक्ति का फल कथन किया है,[1] और आगे भक्ति में रस का विचार किया है।[2] गोविन्द गिल्ला भाई ने इस रचना में हिन्दी की सामान्य परम्परा[3] और अपनी शृंगार सरोजिनी की मान्यता के विपरीत द्वादश रस माने हैं, जो इस प्रकार हैं : १- शृंगार, २- हास्य, ३- करुण, ४- रौद्र, ५- वीर, ६- भयानक, ७- वीभत्स, ८- अद्भुत, ९- शांत, १०- दास्य, ११- सख्य, १२- वात्सल्य। परन्तु उन्होंने भक्ति में केवल शांत, शृंगार, सख्य, दास्य और वात्सल्य ही पांच रस माने हैं।[4] रूप गोस्वामी ने भक्ति रस के जो पांच भाव शांति, प्रीति, प्रेय, वात्सल्य और मधुर माने हैं, तथा जिनके शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य नामक भाव क्रमश: मूल माने हैं।[5] उन्हीं के आधार पर गोविन्द गिल्ला भाई ने भक्ति में उक्त पांच ही रस माने प्रतीत होते हैं। परन्तु यहां यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने जिस क्रम में इन रसों की चर्चा की है वह रूप गोस्वामी के क्रम के अनुसार नहीं है, साथ ही उन्होंने इन रसों या भावों में किसी को प्रधान या अप्रधान नहीं कहा है। वरन् उन्होंने सभी को समान मानते हुए लिखा है कि :

१- भक्तिकल्पद्रुम, पृ० ६ छं० ५२ से ५५।

२- वही, पृ० ६ छं० ५६,से ५६।

३- वही, पृ० ६ छं० ५७, ५८।

४- वही, पृ० ६छं० ६०।

५- हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ५३१।

जाको जैसो इच्छा होय । ता रस में गुन गावे सोय ।
वामें ना कछु भेद लखाय । जेहि भजे,[1] सो हरि को जाय ।[2]

इस प्रकार रूप गोस्वामी के समान उन्होंने माधुर्य भाव या रस को सर्वश्रेष्ठ न कह कर अन्य सभी भावों को उसके समकक्ष ही माना है । इस प्रकार उक्त भाव भेद का कारण किसी भाव विशेष की श्रेष्ठता न मान कर उन्होंने उक्त भाव भेद का कारण भक्ति की अभिरुचि का भेद माना है ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने भक्ति का विवेचन करने से पूर्व संस्कृत के अनेक भक्ति शास्त्रीय ग्रंथों का गहन अध्ययन किया था, परन्तु उन्होंने अपने ग्रंथ में किसी आचार्य विशेष का अन्धानुकरण नहीं किया है, अपितु सर्वत्र अपनी स्वतंत्र चिन्तन शक्ति और सुस्पष्ट विवेचन शैली का परिचय दिया है । यद्यपि उन्होंने भक्ति और रस का विवेचन कर अपने आप को आधुनिक हिन्दी के आचार्यों के अधिक निकट सिद्ध कर दिया है, परन्तु उनकी विवेचन शैली रीति कालीन आचार्यों की लक्षण उदाहरण वाली ही है । इस प्रकार रीति काल और आधुनिक काल की कुछ विशेषताएं इनकी रचना में मिलती हैं जो संक्रमण काल में हुए कवि के लिए स्वाभाविक ही कही जायेगी ।

१।४ गोविन्द गिल्ला भाई का हिन्दी कोश और व्याकरण विवेचन

हिन्दी में व्याकरण लेखन की परम्परा, कोश लेखन की परम्परा की तुलना में अत्यधिक आधुनिक है । संस्कृत में भी व्याकरण के पूर्व ही कोश लेखन की परम्परा मिल जाती है, क्योंकि निरुक्तकार यास्क से बहुत पूर्व ही वैदिक कोश निघंटु तैयार हो चुका था । परन्तु परवर्ती काल में संस्कृत में व्याकरण और कोश दोनों ही समान रूप से और बहुत कुछ समानान्तर रूप से मिलते हैं । परन्तु हिन्दी में हिन्दी भाषा का व्याकरण हिन्दी में हिन्दी कोश के लिखे

१- पाठान्तर : गहे, पृ० १० छं० ६२ ।

२- भक्ति कल्पद्रुम ह०प्र०सं० १५३, पृ०१० छं० ६२ ।

जाने के बहुत पश्चात् लिखा गया मिलता है। भक्ति कालीन कवियों में नंददास आदि कुछ कवि ऐसे मिलते हैं जिन्होंने हिन्दी में हिन्दी कोश लिखने की परंपरा प्रारंभ की। परन्तु इससे बहुत पहिले ही अमीर खुसरो इस दिशा में कुछ कार्य अपनी पुस्तक खालिकबारी में कर चुके थे[१]। परन्तु रीतिकाल की परिसीमा में जबकि हिन्दी में शास्त्रीय साहित्य प्रभूत मात्रा में तथा विविध विषयों पर लिखा जाने लगा था, अनेकानेक सुन्दर कोश अनेक हिन्दी कवियों ने तैयार किये। गुजरात में हेमचंद्र के समय से जो नाममाला के रूप में भाषा कोश लेखन की परंपरा प्रारंभ हुई थी वह गुजरात के हिन्दी कवियों द्वारा खूब विकसित हुई। गुजरात में ऐसे अनेक कवि मिलते हैं जिन्होंने सुन्दर कोश लिखे हैं[२]।

जिस प्रकार अमीर खुसरो की खालिकबारी को हिन्दी का प्रथम कोश कहा जा सकता है, उसी प्रकार मिर्जा खान द्वारा लिखा गया ब्रजभाषा व्याकरण हिन्दी का प्रथम व्याकरण कहा जा सकता है[३]। डा०सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने मिर्जा खांन के इस व्याकरण के विषय में लिखा है कि "अब तक के प्राप्त साहित्य के आधार पर इसे आधुनिक सभी भारतीय भाषाओं के व्याकरणों में प्राचीनतम कहा जा सकता है[४]।" मिर्जा खांन ने अपने फारसी ग्रंथ तुहफत उल हिन्द में ब्रजभाषा के काव्य शास्त्र, संगीत, छंद शास्त्र, काम शास्त्र और सामुद्रिक शास्त्र के साथ अंत में ब्रजभाषा फारसी कोश भी दिया है[५]। इस प्रकार मिर्जा खांन ने हिन्दी काव्य से संबद्ध सभी प्रमुख शास्त्रों का विवेचन अपने इस ग्रंथ में किया है।

इसी समय के आस पास गुजरात के एक हिन्दी कवि रत्नजित ने ब्रजभाषा के एक व्याकरण के साथ साथ भाषा शब्द सिन्धु और भाषा धातु माला नामक ग्रंथ भी लिखे हैं[६], जो हिन्दी व्याकरण और कोश दोनों की दृष्टि से अत्यधिक

१- तुलनीय है : हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, रामकुमार वर्मा, पृ०१४४।
२- ,, परिशिष्ट द्वितीय।
३- ,, मिर्जा खांन : ग्रामरआफ द ब्रज भाषा, इंट्रोडक्शन, सं०जियाउद्दीन, पृ०१
४- ,, वही, फोरवर्ड, डा०सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, पृ० ग्यारह।
५- ,, वही, इंट्रोडक्शन, एम०जियाउद्दीन, पृ०१०।
६- ,, परिशिष्ट, द्वितीय।

महत्वपूर्ण रचना हैं, परंतु प्रकाशित न होने के कारण इन रचनाओं के विषय में विस्तार से कुछ नहीं कहा जा सकता। परन्तु इतना निश्चित है कि गोविन्द गिल्ला भाई के पूर्व हिन्दी में व्याकरण और कोश दोनों लिखे जाने लगे थे, परन्तु कोश लेखन की परंपरा ही विशेष रूप से विकसित हो चुकी थी, व्याकरण लेखन की नहीं। मिर्जा खान और रत्नचित के अतिरिक्त हिन्दी का वैयाकरण एक पाश्चात्य विद्वान और मिलता है जिसका नाम है जैकोब जोशुआ केटेलेअर[१]।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई के समय से पूर्व हिन्दी में व्याकरण और कोश दोनों लिखे जाते थे।

गोविन्द गिल्ला भाई ने एक स्थान पर निम्नलिखित अपने कोशों का उल्लेख किया है, १- एकाक्षरी कोश, २- अनेकार्थकोश, ३- अनेकैकार्थ कोश, ४- गोविन्दार्णव कोश, ५- अंक अभिधान मंजरी[२]। परन्तु उपलब्ध सामग्री में अपूर्ण रूप में ही निम्नलिखित कोश मिलते हैं-

१- अव्यय कोश[३]
२- एकाक्षरी कोश[४]
३- अनेकैकाक्षरी कोश[५]
४- गोविन्दार्णव कोश[६]
५- अंक अभिधान मंजरी[७]

परन्तु उन्होंने कहीं भी अपने किसी व्याकरण ग्रंथ का उल्लेख नहीं किया है। हां, एक स्थान पर हिन्दी व्याकरण विषयक कुछ चर्चा व्याकरण नाम से ही मिलती है[८]। आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा लिखा गया कोश और व्याकरण विषयक साहित्य अपने आप में विशेष महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता। परन्तु

१- तुलनीय है : मिर्जा खांन : ग्रामर आफ ब्रजभाषा, फोरवर्ड :डा०सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, पृ०ग्यारह।

२- लघु डायरी, ह०प्र०सं०, पृ० सं० नहीं है।

३- गोविन्द गद्य साहित्य संग्रह, ह०प्र०सं० २०५, पृ०५।

४- वही, पृ०१५ ५- वही, पृ०२५।

६- वही, पृ०४१। — पृ०६१। ८- वही, पृ० १-४।

जो कुछ उनका कोश और व्याकरण विषयक साहित्य मिला है उससे उनके कृतित्व की व्यापकता अवश्य सिद्ध होती है । तात्पर्य यह कि गोविन्द गिल्ला भाई की रुचि इस प्रकार के साहित्य में थी, साथ ही उन्होंने इस दिशा में कुछ काम भी किया है । क्योंकि जो कार्य उन्होंने प्रारम्भ किया था, उसे वे पूर्ण नहीं कर पाये। अत: उस कार्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता । उसका महत्व है, क्योंकि उससे उनके कृतित्व की एक विशिष्ट दिशा स्पष्ट होती है और उनके कृतित्व की व्यापकता भी सिद्ध होती है ।

जिस रूप में गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा लिखित हिन्दी कोश और व्याकरण विषयक सामग्री उपलब्ध होती है, उसे देखते हुए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कोश रचना और व्याकरण लेखन दोनों में उन्होंने आधुनिक शैली का अनुसरण किया है। रीतिकालीन हिन्दी कोश संस्कृत कोशों की शैली पर ही लिखे गये हैं । आशय यह कि इन कोशों में एक विषय या वस्तु से संबद्ध सभी प्रचलित शब्द एकत्रित मिलते हैं । परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई ने आधुनिक कोश शैली के अनुसार अकारादि क्रम में शब्दों को संग्रहीत कर उनका अर्थ दिया है ।[१] अंक अभिधान मंजरी में उन्होंने तुलनात्मक शैली अपनाई है, अर्थात् वहां हिन्दी के अंकों या संख्यावाची शब्दों को एकादि क्रम में संग्रहीत कर उनकी तुलना संस्कृत और गुजराती के साथ की गयी है ।[२] इसी प्रकार व्याकरण में भी उन्होंने तुलनात्मक दृष्टि का परिचय तो दिया ही है, आधुनिक कोष्टक आदि का प्रयोग भी किया है । नीचे हिन्दी सर्वनामों का कोष्टक उदाहरणार्थ दिया जा रहा है :

व्याकरण विशे सर्वनाम नुं कोष्टक[३]

	गुजराती		संस्कृत		हिन्दुस्तानी भाषा	
	एक०	वहु०	एक०	वहु०	एक वचन	वहु वचन
पहेली पुरुष	हुं	अमे	अहं		मैं, मैं, मो, हुं, हों, मुझ	हम

१- तुलनीय है : गोविन्द गद्य साहित्य संग्रह ह०प्र०सं० २०५ पृ०५, १५, २५ आदि ।

२- ,, : वही, पृ०६१ ।

३- ,, : वही, पृ० १ ।

बीजो पुरुष	तुं	तम	तमो	त्वम्	तूं, तुम, तो, तैं, तुहि	तुम तुम्ह, आप, रावरे
त्रीजो पुरुष	ते	तेओ			वह, यह, सो, सोई, वहि उस, इस, या, ते, तिहि, तेहि, तिस, सोही, इह एह	वे, उन, ये, या, इन, वो, उह, वा, वाहि, उन्हो, इन्हो, विन, विस, तिन, तिन्हो,

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई को संस्कृत और हिन्दी व्याकरण का ज्ञान अधिक नहीं था। हिन्दी के जिन सर्वनामों का उन्होंने उल्लेख किया है उसमें ब्रज और खड़ी बोली दोनों के सर्वनाम मिला दिये गये हैं। साथ ही रावरे जैसे पूर्वी के सर्वनाम, जिसका प्रयोग साहित्यिक ब्रजभाषा में ही होता है, का उल्लेख यह सिद्ध करता है, कि उन्होंने बोलचाल की हिन्दी का व्याकरण लिखने का प्रयास न कर साहित्यिक हिन्दी का व्याकरण लिखने का प्रयास ही किया है। परन्तु साहित्यिक हिन्दी में उन्होंने ब्रज और खड़ी बोली दोनों के मिश्रत स्वरूप को स्वीकृत किया है जो व्याकरण और भाषा विज्ञान की दृष्टि से तर्क संगत नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने हिन्दी कोश और व्याकरण लेखन की दिशा में जो प्रयास किया है वह केवल इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उससे उनके कृतित्व की व्यापकता सिद्ध होती है, अन्यथा शास्त्रीय दृष्टि से उसका कोई विशेष मूल्य नहीं माना जा सकता। क्योंकि एक तो अपूर्ण रूप में प्राप्त है दूसरे इस दिशा में उनका कार्य विज्ञान सम्मत नहीं है।

इस प्रकार गोविन्द गिल्ला भाई के कवि शिक्षा निरूपण, नीति शास्त्र, विवेचन, भक्ति शास्त्र विवेचन और कोश व्याकरण विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि उनका आचार्यत्व मूलत: रीतिकालीन आचार्यों के आचार्यत्व के समान ही है, परन्तु रीतिकाल के अनेकानेक अलंकार निरूपक, रस निरूपक या नायिका भेद निरूपक आचार्यों की तुलना में गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व अत्यधिक व्यापक है, क्योंकि उन्होंने एक ही साथ अलंकार और नायिका भेद का निरूपण

तो सविस्तार किया ही है, विविध काव्यांग निरूपक आचार्यों के समान काव्य शास्त्र के अनेक महत्वपूर्ण विषयों का सुस्पष्ट एवं सविस्तार विवेचन भी किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने हिन्दी काव्य और काव्यशास्त्र से सम्बद्ध कवि शिक्षा, भक्ति, नीति और कोश व्याकरण का भी विवेचन किया है, जो रीतिकाल के विविध काव्यांग निरूपक आचार्यों में भी सामान्यत: नहीं प्राप्त होता ।

इस प्रकार सिद्ध है कि गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व अनेक दृष्टियों से रीतिकालीन आचार्यों के आचार्यत्वों से अधिक व्यापक है ।

२। गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व का वैशिष्ट्य

आधुनिक काल में आचार्य शब्द न केवल प्राचीन परम्परा से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है, वरन् उसके अर्थ की सीमाएं भी आज अपेक्षाकृत अधिक व्यापक हो गयी हैं । आशय यह कि रीतिकालीन आचार्य की शास्त्रनिष्ठा आज के आचार्य में भी है परन्तु इसके साथ साथ और भी ऐसे अनेक तत्व हैं जो रीति कालीन आचार्यों में नहीं मिलते और आज के आचार्यों में अनिवार्यत: नहीं, तो प्रधानत: अवश्य मिलते हैं । उदाहरणार्थ आज के आचार्यों की पाश्चात्य या पाश्चात्य प्रभावित विवेचन शैली, ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन प्रणाली आदि कुछ ऐसी बातें हैं जो आधुनिक आचार्यों में ही मिलती हैं या मिल सकती हैं। इसी प्रकार रीतिकालीन आचार्यों में कुछ ऐसी विशेषताएं मिलती हैं जो उन्हीं में मिलती हैं, आधुनिक आचार्यों में नहीं । परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई अपनी ऐतिहासिक स्थिति के कारण एक ऐसे आचार्य हैं जिनमें दोनों युगों के आचार्यों की कुछ कुछ विशेषताएं इस रूप में मिलती हैं, कि जिस रूप में वे न रीतिकालीन आचार्यों में मिलती हैं न आधुनिक आचार्यों में । आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व में रीतिकालीन और आधुनिक आचार्यों की विशेषताएं इस प्रकार मिश्रित रूप में मिलती हैं । उनके आचार्यत्व में कुछ वैशिष्ट्य आ गया है।

गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व के वैशिष्ट्य के विषय में पहिले यथासमय संकेत किया जा चुका है, परन्तु यहां उनके आचार्यत्व के उन अंगों का संक्षिप्त अध्ययन किया जा रहा है जिनमें उनका वैशिष्ट्य विशेष रूप से स्पष्ट हुआ है।

२।१ गोविन्द गिल्ला भाई की टीकाएं

टीका टिप्पणी लिखने की परम्परा में भारतीय साहित्य में अत्यन्त प्राचीन काल से मिलती है[१]। संस्कृत में यह परम्परा विशेष रूप से विकसित हुई तथा कुछ विषयों जैसे व्याकरण आदि में तो यह परम्परा मौलिक ग्रंथों में भी अधिक विकसित मिलती है। इसीलिए विद्वानों ने टीका साहित्य को संस्कृत में मौलिक साहित्य से भी अधिक विशाल माना है[२]। संस्कृत की स्थानापन्न भाषा बनने के साथ साथ हिन्दी में भी यह परम्परा मध्यकाल में प्रारम्भ हो जाती है, जो आज तक विकसित होती चली आ रही है[३]। आधुनिक काल में टीका का अर्थ तो वही है जो प्राचीन काल में मिलता है परन्तु टिप्पणी शब्द का अर्थ कुछ बदल गया है। आजकल टिप्पणी शब्द का प्रयोग बहुत कुछ अंग्रेजी शब्द नोट्स के अर्थ में होता है[४]।

गोविन्द गिल्ला भाई ने प्राचीन अर्थ में टीका और आधुनिक अर्थ में टिप्पणी दोनों ही लिखी हैं। टीकाएं उन्होंने अपने तथा अन्य प्राचीन कवियों के ग्रंथों की लिखी हैं, परन्तु टिप्पणी केवल अपने ही कुछ ग्रंथों में आवश्यकतानुसार कहीं कहीं दी हैं। उन्होंने टीका और टिप्पणी दोनों ही हिन्दी और गुजराती भाषा में लिखी हैं। गुजरात के अनेक हिन्दी कवियों ने हिन्दी की अनेक रचनाओं की गुजराती टीकाएं लिखी हैं और कुछ प्रकाशित भी हुई हैं[५]। गोविन्द गिल्ला भाई ने भी गुजरात के हिन्दी कवि किशन की 'किशन बावनी', महेरामण सिंह कृत 'प्रवीण सागर' की गुजराती टीकाएं लिखी हैं, तथा प्रकाशित की हैं[६]। इसी प्रकार हिन्दी के प्रसिद्ध कवि भूषण की शिवराज भूषण रचना से चुने हुए सौ

१- तुलनीय है : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ३११।
२- ,, : वही।
३- ,, : वही।
४- ,, : वही।
५- देखिए : परिशिष्ट 'द्वितीय'।
६- ,, : गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० २३, स्मरण पोथी, पृ० २२।

छंदों को गुजराती टीका के साथ शिवराज शतक नाम से संवत् १६७१ में प्रकाशित किया है[१]। गोविन्द गिल्ला भाई ने भूषण के शिवराज भूषण पर भी गुजराती टीका लिखी थी, परन्तु उसे वे प्रकाशित न कर सके थे, उसकी एक प्रति प्राप्त हुई है[२]। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने कुछ ग्रंथों जैसे प्रबोध पच्चीसी पर हिन्दी टीका लिखी है[३], और वक्रोक्ति विनोद, श्लेष चंद्रिका, गोविन्द हजारा आदि रचनाओं में आंशिक हिन्दी टीका और टिप्पणी लिखी है[४]। बोध बत्तीसी, प्रारब्ध पचासा, विष्णु विनय पच्चीसी, परब्रह्म पच्चीसी और प्रबोध पच्चीसी नामक रचनाओं पर गुजराती टीकाएं भी लिखी हैं[५]। इसी प्रकार कुछ और रचनाओं को कुछ हस्तलिखित प्रतियों में हिन्दी गुजराती टिप्पणी मिल जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने रीतिकाल की परम्परा के अनुसार टीकाएं लिखीं हैं तथा आधुनिक अर्थ में टिप्पणी। परन्तु उनके कृतित्व का वैशिष्ट्य इस बात में है कि उन्होंने गुजराती और हिन्दी दोनों भाषाओं में यह सब लिखा है, साथ ही अपने तथा अन्य कवियों के ग्रंथों पर भी टीकादि लिखी हैं।

गोविन्द गिल्ला भाई की टीकाओं के विषय में यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इनकी गुजराती टीकाएं कहीं कहीं केवल अनुवाद बन गयी हैं, क्योंकि इनकी दृष्टि टीकाओं में प्रधानत: अर्थ पर ही रही। परन्तु हिन्दी टीकाओं में सर्वत्र यह बात नहीं मिलती। विशेष कर शास्त्रीय ग्रंथों में जैसे वक्रोक्ति विनोद, श्लेष चंद्रिका आदि में कवि ने छंदों के अर्थ को सुपष्ट कर उनमें लक्षण उदाहरण के तारतम्य को भी स्पष्ट किया है। कहीं कहीं इस प्रकार के शास्त्रीय विवेचन को उन्होंने अलग से विवेचन या टीका नाम दिया है[६]।

१- तुलनीय है : स्मरण पोथी, पृ० ३६।

२- ,, : हस्तलिखित प्रति संख्या १०१।

३- ,, : गोविन्द ग्रंथमाला, पृ०३८५ से ४००।

४- ,, : श्लेष चंद्रिका ह०प्र०सं० १५५, पृ० १४१ आदि। वक्रोक्ति विनोद ह०प्र०सं० १५५, पृ०६ आदि, गोविन्द हजारा ह०प्र०सं० २०३, पृ० १, ३, ७ आदि।

५- देखिए: ह०प्र०सं० १७६, १७७, १७८, १७६, १८०क्रमश:। ६- वक्रो० वि०, ह०प्र०सं० १५५, पृ०६।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई की टीकाएं सामान्यत: हिन्दी में लिखी जाने वाली टीकाओं के समान ही हैं, उन्हें संस्कृत की टीकाओं की कोटि में परिगणित नहीं किया जा सकता । परन्तु उनकी टिप्पणियों में आधुनिकता की छाप अवश्य दृष्टिगोचर होती है ।

२।२ गोविन्द गिल्ला भाई का अनुवाद कार्य

हिन्दी में संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओं के ग्रंथों के अनुवाद करने की परम्परा मध्यकाल से ही मिलने लगती है, परन्तु भारतेन्दुकाल के आते आते यह प्रवृत्ति अधिक वेगवती हो जाती है । इस काल में हिन्दी के अनेक लेखकों ने संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं से अनेक ग्रंथों का अनुवाद किया है ।[१] गोविन्द गिल्ला भाई ने भी अपने युग की इस प्रवृत्ति के अनुसार संस्कृत से करीब १३ ग्रंथों का अनुवाद किया है,[२] जिसमें से अमरु शतक और चौर पंचाशिका को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ शास्त्रीय ग्रंथ हैं । परन्तु ये सभी अनुवाद गुजराती में हैं साथ ही सभी अनुवाद पूर्णत: प्राप्त भी नहीं हैं/अत: हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी के लिए गोविन्द गिल्ला भाई के अनुवाद कार्य का विशेष महत्व नहीं माना जा सकता । इसलिए उससे विषय में यहां विचार नहीं किया जा रहा है । हां, गोविन्द गिल्ला भाई का अनुवाद कार्य उनके कृतित्व की व्यापकता तथा वैशिष्ट्य का परिचायक अवश्य माना जा सकता है ।

२।३ गोविन्द गिल्ला भाई का संग्रह कार्य

प्राचीन काल से भारतीय साहित्य में ऐसे संग्रह ग्रंथ मैं मिलने लगते हैं जिनमें विषय के साम्य आदि किसी सिद्धान्त के अनुसार अनेक कवियों की रचना संग्रहीत की जाती हैं । भारतीय साहित्य का आदि ग्रंथ ऋग्वेद संहिता भी इसी प्रकार का संग्रह है, संस्कृत के आचार्यों ने भी मुक्तक काव्य के विवेचन के प्रसंग में इसी

१- तुलनीय है : हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,पृ०४७१, ४७२।
२- स्मरण पोथी, पृ० ३१ ।

प्रकार के संग्रह ग्रंथों की चर्चा की है[१]। हिन्दी में भी इस प्रकार के संग्रह ग्रंथों की प्राचीन परम्परा मिलती है। हिन्दी में कालिदास का कालिदास हजारा विशेष रूप से प्रसिद्ध है,[२] / और भी अनेक संग्रह ग्रंथ प्रसिद्ध हैं तथा कुछ प्रकाशित भी हुए हैं। एक स्थान पर गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने संग्रह ग्रंथों के साथ साथ हिन्दी के अनेक संग्रह ग्रंथों की सूची दी है, जिसे यहां उसी रूप में उद्धृत किया जा रहा है, क्योंकि उनमें से अनेक संग्रह ग्रंथ हिन्दी में अबतक अज्ञात ही हैं, साथ ही उससे हिन्दी संग्रह ग्रंथों की परम्परा तो स्पष्ट हो ही जायेगी और गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा किये गये शोध कार्य का भी कुछ परिचय मिल जायेगा।

संग्रह ग्रंथों के नाम[३]

कवि चरित्र के लिये जिन ग्रंथों में अनेक कवियों की कविता है वह संग्रह ग्रंथों के नाम नीचे लिखते हैं :

नंबर ग्रंथ नाम	कविसंख्या	छपा या लिखा	संग्रह कर्त्ता कवि का नाम
१- साहित्य सिन्धु	६१	लिखा हुआ	वेनीदास
२- शृंगार सिन्धु	५०	,,	भगवानदास
३- कवित्त रत्नमालिका	६६	,,	रसराशि रामनारायण जयपुर
४- गोविन्दानन्दघन	८७	,,	रसिक गोविन्द
५- अलंकार आशय	६६	,,	उत्तमचंद्र, जोधपुर
६- कवि दर्पण	२६	,,	ग्वाल
७- कवि वल्लभ	१३	,,	हरिचरनदास
८- नखशिख	४१	,,	नाम नहीं है।

१- तुलनीय है : हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ५६५, ५६६।

२- ,, : हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० २५२।

३- ,, : गोविन्द गिल्ला भाई के स्फुट कागज पत्र, ह०प्र०सं०।

नंबर	ग्रंथ नाम	कविसंख्या	छपा या लिखा	संग्रहकर्त्ता कवि का नाम
६-	सरसरस	१७	लिखा	लाल कवि आगराउ
१०-	अलंकार रत्नाकर	६३	,,	दलपत वंशीधर
११-	अनुमत भूषण	२४	,,	सरदार, बनारस
१२-	हिन्दी भाषा के फुटकर कवित्त संग्रह	१५६	,,	गोविन्द गिल्ला भाई
१३-	ब्रजभाषा के फुटकर कवित्त संग्रह	१२०	,,	,,
१४-	गोविन्द हजारा	१४१	,,	,,
१५-	साहित्य चिंतामणि	२२५	,,	,,
१६-	प्रेम प्रभाकर	६५	,,	,,
१७-	कवि और कविता प्रथम भाग	४१५	,,	,,
१८-	कवि और कविता द्वितीय भाग	२००	,,	,,
१६-	गुनमाला के पुस्तक में	४०	,,	,,
२०-	वज्रशूचकोपनिषद बारे पुस्तक	६५	,,	,,
२१-	जसराज बावनी बारे पुस्तक में	४०	,,	,,
२३-	कूटक काव्य संग्रह बारे पुस्तक में	८३	,,	,,
२४-	हर्ष जी मेहता कृत काव्य संग्रह बारे पुस्तक में	४०	,,	,,
२५-	शुकरंभा बारे पुस्तक में	१५	,,	,,
२६-	कविनामावली, जोधपुर	७६०	,,	मुंशी देवी प्रसाद

२७- कविनामावली सिहोर	२३१७	,,	गोविन्द गिल्ला भाई
२८- शृंगार संग्रह	१२५	छपा, नवलकिशोरप्रेस	सरदार कवि, काशी
२९- शृंगार सुधाकर कवित्त	१८७	,, काशी	मन्नालाल द्विज कवि
३०- सुन्दरी सर्वस्व सवैया	१०८	,, काशी	,,
३१- शृंगार सरोज, दोहा	-	,, ,,	,,
३२- सुधासर, वृंदावन	-	,, ,,	नवीन कवि
३३- सुन्दरी तिलक	७०	,, ,,	हरिश्चंद्र द्वारा मन्नालाल
३४- रस कुसुमाकर	९०	प्रतापसिंह जी द्वाराअयोध्या में	
३५- हफीजुला खां का हजारा	२६१	छपा, नवलकिशोरप्रेस	हफीजुला खां
३६- षट्ऋतु हजारा	२२२	,, ,,	प्रभाकन्द सुहाने
३७- नखशिख हजारा	१६०	,, ,,	,,
३८- राजरसनामृत		,, कलकत्ता	देवी प्रसाद
३९- कविरत्नमालाप्र०भा०		,, ,,	,,
४०- मनोज मंजरी, प्र०भाग	५१	,, भारत जीवन प्रेस काशी,	नकछेदी तिवारी
४१- ,, ,द्वि०भाग	६५	,, ,,	,,
४२- ,, ,तृ०भाग	७१	,, ,,	,,
४३- ,, ,च०भाग	५७	,, ,,	,,
४४- विज्ञान मार्तण्ड	३४	,, ,,	,,
४५- वीरोल्लास	५४	,, ,,	,,
४६- भडौआ संग्रह प्रथम खंड	६८	,, ,,	,,
४७- ,, द्वि० ,,	६२	,, ,,	,,
४८- ,, तृ० ,,	२४	,, ,,	,,
४९- ,, च० ,,	६१	,, ,,	,,
५०- शृंगार चंद्रिका	४१	,, ,,	,,
५१- भक्तमाल टीका	१५२	,, नवकिशोर प्रेस, लखनऊ	प्रियादास
५२- कवि वचन सुधा		,, भारत जीवन प्रेस, काशी,	हरिश्चन्द्र
५३- पावस भूषण	५०	,, आगरा	घनश्याम

५४- पावस संग्रह	-	,, काशी	हरिश्चन्द्र
५५- पावस प्रमोद	५०	,, मथुरा	नानकचंद
५६- मनोरंजन संग्रह	१०२	,, कानपुर	गौरीशंकर
५७- माधव विलास	६५	,, लखनऊ	माधव प्रसाद
५८- काव्यकला हरिश्चंद्र	५१	,, बांकीपुर, पटना	साहब प्रसाद
५९- काव्य शिरोमणि	५५	,, आगरा	कुंदनलाल
६०- रसिक मंजरी	५५	,, आगरा	कृष्णालाल
६१- काव्य संग्रह पंचांग	२२	,, काशी	गंगा सुत
६२- काव्यसंग्रह	६०	,, वेंकटेश्वरप्रेस, बंबई	गोवर्धन
६३- काव्य रत्नाकर	५७	,, ,,	बनवारीलाल
६४- काव्य कलामिनी	-	,, लखनऊ	सीताराम
६५- शिशिर सुषमा	१८	,, मथुरा	-
६६- शिवसिंह सरोज	-	,, लखनऊ	शिवसिंह सेंगर
६७- कवि कीर्तिकलानिधि	-	,, काशी	नकछेदी तिवारी
६८- सुजान सरोज	६१	,, लखनऊ	सुजान कवि
६९- गोपी प्रेम पीयूष प्रवाह	-	,, मथुरा	नवनीत
७०- ऊधो गोपी शतक	२०	,, आगरा	घनश्याम
७१- सभाविलास	१४	,, लखनऊ	-
७२- मनोरंजन काव्य	२१		
७३- प्रेम तरंग	-	,, काशी	मन्नालाल
७४- समस्यापूर्ति संग्रह	-	,, काशी	राव माता प्रसाद
७५- काशी कवि समाज की समस्या पूर्ति-प्रथम भाग	३८	,, काशी	काशी कवि समाज
७६- द्वितीय भाग	५०	,, ,,	,,
७७- तृतीय भाग	५४	,, ,,	,,
७८- चतुर्थ भाग	३८	,, ,,	,,
७९- काशी कवि मंडल की पूर्ति	-	,, ,,	गोस्वामी कन्हैयालाल
८०- पटना कवि समाज की ,,	-	,, पटना	-

गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा तैयार की गयी उक्त संग्रह ग्रंथों की तालिका से स्पष्ट है कि उन्होंने प्रस्तुत तालिका अपने कवि चरित्र के लिए बनाई थी, अत: उसमें सभी प्रकार के काव्य संग्रहों की नामावली दे दी गयी है। परन्तु इससे इतना स्पष्ट अवश्य हो जाता है कि हिन्दी में काव्य संग्रह तैयार करने की समृद्ध परम्परा थी तथा गोविन्द गिल्ला भाई के समय में इस प्रकार के काव्य संग्रहों को प्रकाशित करने की प्रवृत्ति विशेष रूप से थी। इसीलिए गोविन्द गिल्ला भाई ने अनेक काव्य संग्रह तैयार किये थे। प्रस्तुत तालिका में गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने करीब १४ संग्रहों का उल्लेख किया है। परन्तु अन्यत्र उन्होंने अपने तीन काव्य संग्रहों गोविन्द हजारा, साहित्य चिन्तामणि और प्रेम प्रभाकर का ही उल्लेख किया है[१], जिनमें से केवल प्रथम दो ही उपलब्ध हैं। गोविन्द हजारा और साहित्य चिन्तामणि के विषय आदि के विषय में कृति परिचय के प्रसंग में विस्तार से विचार किया जा चुका है, और उन ग्रंथों में आये ग्रंथों और कवियों की नामावली भी अलग से दी जा चुकी है। प्रेम प्रभाकर ग्रंथ के विषय तथा उसमें उद्धृत रचनाओं के कवियों तथा उनकी रचनाओं की सूची भी कवि ने उक्त तालिका के साथ ही एक अन्य पृष्ठ पर दी है[२]। अत: उस रचना के विषय में किसी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती। शेष संग्रह ग्रंथों के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

गोविन्द गिल्ला भाई के उपलब्ध काव्य संग्रहों तथा प्राप्त सामग्री के अध्ययन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ये काव्य संग्रह उनकी शोध प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही निष्पन्न हुए थे। गोविन्द गिल्ला भाई की शोध प्रवृत्ति के विषय में आगे विचार किया जायेगा, परन्तु यहां इतना ही ज्ञातव्य है कि उनकी शोध प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप उन्होंने जहां ये काव्य संग्रह तैयार किये हैं वही हिन्दी के अनेकानेक कवियों और उनकी रचनाओं के विषय में अत्यधिक सामग्री संग्रहीत की है।

१- देखिए : स्मरण पोथी, पृ० ६३।

२- ,, : परिशिष्ट 'पंचम'।

गोविन्द गिल्ला भाई के उक्त काव्य संग्रहों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि ये काव्य संग्रह उनके कवित्व और आचार्यत्व के अतिरिक्त विस्तार हैं। उनके कवित्व के अध्ययन के प्रसंग में स्पष्ट किया जा चुका है कि शृंगार और नीति काव्य उनके अपेक्षाकृत अधिक सफल एवं प्रौढ़ कवित्व के परिचायक हैं। इसीलिए इन दोनों काव्य प्रकारों का ही दर्शन इनके काव्य संग्रहों में होता है। साहित्य चिन्तामणि में जिस प्रकार गोविन्द गिल्ला भाई के नीति काव्यकारत्व के दर्शन होते हैं उसी प्रकार गोविन्द हजारा और प्रेम प्रभाकर के मूल में उनकी शृंगार प्रियता दृष्टिगोचर होती है। गोविन्द हजारा एक प्रकार से गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व के स्वरूप का परिचायक भी है/इसीलिए उसमें काव्यशास्त्र के विविध विषयों का विवेचन भी संग्रह के साथ साथ मिलता है। गोकुल कवि के दिग्विजय भूषण तथा रस कुसुमाकर जैसे ग्रंथों के समान गोविन्द हजारा काव्य संग्रह के साथ साथ काव्यशास्त्र का ग्रंथ भी है। हिन्दी में इस प्रकार के काव्य संग्रहों के अतिरिक्त जिनमें काव्य संग्रह के साथ साथ काव्य विवेचन भी हो, ऐसे भी काव्य संग्रह मिलते हैं, जिनके मूल में कोई एक विषय जैसे नायिका भेद, षट् ऋतु वर्णन आदि ही होता है। गोविन्द गिल्ला भाई ने उक्त दोनों प्रकार के काव्य संग्रह तैयार किये हैं, जो उनके आचार्यत्व के वैशिष्ट्य के प्रबल प्रमाण माने जा सकते हैं। क्योंकि हिन्दी के अधिकांश आचार्यों ने इस प्रकार का प्रयास नहीं किया। अत: गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व रीतिकालीन और आधुनिक आचार्यों की तुलना में अधिक व्यापक एवं विशिष्ट कहा गया है।

२।४ गोविन्द गिल्ला भाई का शोध कार्य

शोध आधुनिक आचार्यों की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है। यद्यपि प्राचीन आचार्य शोध प्रवृत्ति शून्य नहीं कहे जा सकते, परन्तु जिस अर्थ में आज शोध शब्द का प्रयोग होता है, उस अर्थ में शोध कार्य आधुनिक काल से पूर्व नहीं मिलता। गोविन्द गिल्ला भाई जैसे मूलत: विशुद्ध रीतिकालीन आचार्य में शोध

की आधुनिक एवं वैज्ञानिक प्रवृत्ति विरोधाभास सी लगती है। परन्तु जिस प्रकार गोविन्द गिल्ला भाई ने शोध कार्य किया है, उससे स्वत: सिद्ध हो जाता है कि वे हिन्दी के उन गिने चुने शोधकर्ताओं में से हैं जिनकी शोधों पर आधुनिक हिन्दी की शोध परम्परा आधारित है।

हिन्दी की शोध परम्परा आज दिन प्रति दिन विकसित हो रही है। परन्तु हिन्दी का कोई भी शोध छात्र शिवसिंह सेंगर, मिश्रबन्धु आदि हिन्दी के आदि-शोध कर्ताओं को नहीं भुला सकता, इसी प्रकार गोविन्द गिल्ला भाई को भी कभी नहीं भुलाया जा सकता। मिश्र बन्धु विनोद में मिश्रबन्धुओं ने गोविन्द गिल्ला भाई की शोधों को कृतज्ञतापूर्वक याद किया है[१]। आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने उनके भूषण के शुद्ध संस्करण के प्रकाशन की प्रशंसा की है[२]। परन्तु दुख का विषय है कि गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा संगृहीत समस्त शोध सामग्री आज उपलब्ध नहीं है। फिर भी उनके जो कागज पत्र प्राप्त हुए हैं उससे उनके कार्य का अनुमान ही लगाया जा सकता है और उनके कृतित्व के इस पक्ष के विषय में कल्पना की जा सकती है[३]।

गोविन्द गिल्ला भाई की शोधों के विषय में दो दृष्टियों से विचार किया जा सकता है - १- शोध के क्षेत्र में उन्होंने क्या किया, २- शोध के क्षेत्र में वे क्या करना चाहते थे। शोध के क्षेत्र में गोविन्द गिल्ला भाई ने जो कुछ किया है, उसके विषय में यही कहा जा सकता है कि उन्होंने विभिन्न स्थानों की यात्रा कर के, और हिन्दी के विभिन्न कवियों तथा लेखकों से पत्र व्यवहार करके हिन्दी के प्राचीन साहित्य को संगृहीत किया था, और हिन्दी के प्राचीन

१- गोविन्द गिल्ला भाई के शोध कार्य का आगे जो विवरण दिया जा रहा है वह उनके उपलब्ध स्फुट कागज पत्रों तथा डायरी आदि के उल्लेखों पर आधारित है, जो (बड़ौदा विश्वविद्यालय के) हिन्दी विभाग में सुरक्षित है। आगे उनका संदर्भ टंकित नहीं किया जायेगा। क्योंकि कागजों पर संख्या आदि क्रम से नहीं है।

२- तुलनीय है : मिश्र बंधु विनोद, प्रथम भाग, भूमिका , पृ० ६

३- ,, : हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ५५५।

कवियों के विषय में जितनी संभव हो सकी उतनी जानकारी एकत्रित की थी। गोविन्द गिल्ला भाई अपनी इन शोधों के आधार पर हिन्दी के प्राचीन साहित्य को प्रकाशित करना चाहते थे तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास के रूप में हिन्दी कवि चरित्र लिखना चाहते थे।

गोविन्द गिल्ला भाई ने कितनी सामग्री एकत्रित की होगी इसका अनुमान तो मिश्रबन्धुओं के इस कथन से ही लगाया जा सकता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने उनके पास जो हिन्दी कवियों और लेखकों की विवेचना सहित जो वृहद सूची भेजी थी उससे उनको प्राय: ५०० अज्ञात लोगों का पता चला था।[१] गोविन्द गिल्ला भाई के जो स्फुट कागज पत्र मिले हैं उसमें भी पचास साठ कवि सूचियां हैं, जिनमें सहस्रों कवियों के नाम उनकी रचनाओं के नाम तथा संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके अतिरिक्त कवि चरित्र नाम से कुछ कागज हैं जिसमें अकारादि क्रम में हिन्दी के ७४ कवियों का परिचय आदि दिया गया है। 'भाषा कविन के टूंक जीवन चरित्रो 'नामक एक गुजराती लेखमाला में हिन्दी के अनेक कवियों का जीवन और कृति परिचय दिया है। इसी प्रकार एक छोटी सी पुस्तिका में तालिका रूप में १३४ कवियों की उन रचनाओं का विवरण दिया गया जो गोविन्द गिल्ला भाई के पास थी और प्रकाशित नहीं हुई थी। गोविन्द गिल्ला भाई ने एक स्थान पर बिहारी सतसई की ३१ टीकाओं का उल्लेख किया है जो उनके पास थी, उन टीकाओं का विवरण उन्हीं के शब्दों में यहां उद्धृत किया जा रहा है :

१- बिहारी सतसई की संस्कृत गद्य टीका , कवि नाम नहीं मिलता है।
२- आर्या गुम्फ, यह आर्याओं में संस्कृत पद्य टीका , पंडित हरि प्रसाद कृत।
३- शृंगार सप्तशतिका , बिहारी की संस्कृत दोहा में और गद्य में टीका, भाषा गद्य परमानन्द कृत।

१- तुलनीय है : मिश्रबंधु विनोद, प्रथम भाग - मिश्रबंधु, पृ० ६।

४- जुल्फकारखां कृत सतसई की टीका, दिल्लीपति जहांदार शाह के दीवान, अमीरुलउमरा नसरत जंग ।

५- प्रबन्ध घटना, राजा गोपाल शरण कृत, सन् १७०० ।

६- अनवर चंद्रिका, नवाब अनवर खां के नाम से शुभकरन कवि ने बनाई, सं० १७७१ में ।

७- साहित्य चंद्रिका, कवि करण भट्ट भाट, पन्ना के राजा हृदयशाहि के सभा में सं० १७३७ में विद्यमान ।

८- रघुनाथ कृत टीका, काशी के बंदीजन, काशीराज के पास थे ।

६- रसचंद्रिका, नवाब ईसवीखां कृत नरवरगढ के राजा क्षत्रसिंह के लिए सं० १८०६ में रची ।

१०- हरिप्रकाश, हरिचरणदास कृत ।

११- लाल चन्द्रिका, लल्लूलाल जी ।

१२- कानविन चित्र चंद्रिका, काशी वासी सरदार कृत ।

१३- बिहारी की टीका यूसफ खां कृत ।

१४- बिहारी टीका, राम रामबचा शिरमौर के राजा की सभा में था ।

१५- बिहारी की टीका, वैद्यक टीका, छोटूराम कृत, वैद्यक अर्थ में सब दोहा ।

१६- बि०टी० देवकोनन्दन टीका, कवि ठाकुर कृत सं० १८६१ में रचि, वामें सतसई बनने का कारण लिखा है ।

१७- वि०टी० प्रभुदयाल पांडे कृत सं० १६५३ , कलकत्ता बंगवासी आफिस से प्रकाशित ।

१८- बिहारी रत्नाकर ।

१६- अमर चंद्रिका, भाषा पद्य, सूरति मिश्र कृत ।

२०- वि०टी० कवितावद्ध, कृष्ण कवि कृत ।

२१- वि०टी० पठान सुलतान के कुंडलिया कवि चंद कृत ।
२२- उपसतसैया कवि गंगाधर कृत कुंडलिया ।
२३- रस कौमुदी, अयोध्या के बाबा जानकीप्रसाद कृत ।
२४- सतसई शृंगार अपूर्ण, हरिश्चन्द्र कृत कुंडलिया ।
२५- बिहारी सुमेर, खंडित, बाबा सुमेर सिंह कृत ४० कुंडलिया ।
२६- वि०टी० जोखूराम कृत, कुंडलिया पांच दश हैं ।
२७- बिहारी बिहार, व्यास अंबिका दत्त कृत कुंडलिया ।
२८- ग्रेयर्सन साहब का सतसई का संस्कृत भाषा गद्य ।
२९- वि०टी० रणछोर जी दीवान, जूनागढ़ ।
३०- वि०टी कल्यान कवि कृत ।
३१- वि०टी० जैन मानसिंह कृत उदयपुर ।

गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा उल्लिखित बिहारी सतसई की टीकाओं की नामावली में से कई टीकाएं ऐसी हैं, जो हिन्दी के विद्वानों में अज्ञात हैं या अल्प ज्ञात । इस प्रकार स्पष्ट ही है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने हिन्दी भाषी प्रदेश से बाहर रहते हुए भी, जो इस दिशा में कार्य किया है, वह अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है । यद्यपि उनके द्वारा संग्रहीत सारी सामग्री आज उपलब्ध नहीं है तथापि जो कुछ उपलब्ध है, वह उनके कृतित्व के इस पक्ष के उद्घाटन के लिए पर्याप्त है ।

गोविन्द गिल्ला भाई के शोध कार्यों के विषय में विचार करते समय यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उन्होंने जो भी शोध कार्य किया है वह एक सुनिश्चित योजना के अनुसार किया है, साथ ही शोध की वस्तुपरक वैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रविधि का ही अनुसरण किया है/ जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि गोविन्द गिल्ला भाई हिन्दी के प्राचीन साहित्य के प्रकाशन के साथ साथ हिन्दी साहित्य का इतिहास कवि चरित्र के रूप में लिखना चाहते थे।

उन्होंने यह कार्य प्रारम्भ भी कर दिया था। हिन्दी के कवियों की वृहद् सूची उन्होंने तैयार कर ली थी तथा उन कवियों का जीवन चरित्र आदि उन्होंने अकारादि क्रम में प्रारम्भ किया था। परन्तु ये विवरण अपूर्ण ही मिलते हैं। गोविन्द गिल्ला भाई हिन्दी के प्राचीन कवियों की रचनाओं को प्रकाशित करना चाहते थे, यह बात उनकी डायरी के उन पृष्ठों से सिद्ध होती है, जिनमें उन्होंने हिन्दी की कुछ रचनाओं के मुद्रण आदि के व्यय का पूरा पूरा व्योरा लिखा है। इतना ही नहीं वरन् किशन कवि की किशन बावनी, भूषण की शिवराज शतक आदि रचनाएं प्रकाशित भी की हैं, अत: उनकी शोधों के मूल में वर्तमान उनके प्रयोजन के विषय में किसी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती।

आगे व्याकरण आदि के विवेचन के प्रसंग में गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा तैयार किये गये कोष्टक तथा तालिका आदि के विषय में संकेत किया जा चुका है कि उन्होंने जो भी कार्य शोध के क्षेत्र में किया, बड़ा ही व्यवस्थित था तथा विश्लेषणात्मक था। उनकी डायरी आदि में स्थान स्थान पर तालिका आदि देखी जा सकती हैं जो यही सिद्ध करती हैं। इसी प्रकार एक स्थान पर उन्होंने शिवसिंह सरोज का विश्लेषण किया है, जिसमें सर्वप्रथम अकारादि क्रम में शिवसिंह सरोज में आये हुए कवियों की नामावली दी गयी है, फिर उन कवियों की नामावली दी गयी है जिनकी कविता नहीं है, फिर कवियों की रचनाओं की सूची, दी गयी है। तथा अन्त में पुनरावलोकन शीर्षक के नीचे उन्होंने ग्रंथों का वर्गीकरण किया है और भाषा कोष के ग्रंथ, भाषा पिंगल ग्रंथ, भाषा नायिका भेद के ग्रंथ, नवरस के ग्रंथ, अलंकार ग्रंथ, काव्य ग्रंथ, संग्रह ग्रंथ, व्यंग के ग्रंथ, चित्रकाव्य के ग्रंथ, दूषण ग्रंथ, दूती ग्रंथ, भाषाँ दूषण की टीका, कवि प्रिया की टीका, रसिक प्रिया की टीका, रसराज की टीका, सतसई नामक ग्रंथ, बिहारी की टीका, नखशिखके ग्रंथ के रूप में उनका वर्गीकरण कर उनकी भिन्न भिन्न सूची दी [illegible] हैं। ये सूची अब भी हिन्दी के शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत महत्व की वस्तु हैं।

यहां यह बात विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा संग्रहीत समुची साम्ग्री अत्यन्त विश्वसनीय है । क्योंकि एक तो सर्वत्र उन्होंने, आधुनिक शोध प्रबन्धों के समान अपनी जानकारी का मुल स्रोत लिख दिया है, या कोई अन्य प्रमाण दिया है तथा जहां उन्हें किसी विषय विशेष के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है स्पष्ट लिखा दिया है कि हमें इस विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है । कवि चरित्र में इस प्रकार के उल्लेख स्थान स्थान पर आते हैं । इसी प्रकार अपनी हस्तलिखित प्रतियों के विषय में जहां लिखा है वहां स्पष्ट कर दिया है कि उस प्रति में कितने पृष्ट हैं या किस विषय की कितनी चर्चा है । एक स्थान पर साहित्य सिन्धु नामक ग्रंथ की एक प्रति के विषय में लिखते हुए कहता है कि " साहित्य सिन्धु ग्रंथ - साहित्य सिन्धु ग्रंथ ना वारमां तरंग मां प्रारंभ मां मान जनित विप्रलंभ तो नथी । तेमा त्रणे मान, मान मोचन, कलहंतारिता नायका, शाप जनित विप्रलंभ, प्रवास हेतुक विप्रलंभ, प्रवत्सत्पतिका, द्वादशमास प्रोषितपतिका, विरह नी दश दशा, वसंतऋतु होली, इत्यादिक नथी, पण ग्रीष्म ऋतु ना सवैया १४७ मां थी छे । त्यार पछो स्तरंग २५ मां अन्योक्ति वर्णन छे तेमा स्थावरान्योक्ति मां प्रथम हिमालय अने मेरु नी अन्योक्ति छे । ते सुवर्णान्योक्ति ना छप्पय थी नथी । त्याथी ग्रंथ अपूर्ण छे। (साहित्य सिन्धु ग्रंथ की बारहवीं तरंग में प्रारंभ में मान जनित विप्रलंभ से नहीं है । उसमें तीनों मान, मान मोचन, कलहंतारिता नायिका, शाप जनित विप्रलंभ, प्रवास हेतुक विप्रलंभ, प्रवत्सत्पतिका, द्वादशमास प्रोषित पतिका, विरह की दस दशा, वसंत ऋतु होली इत्यादिक नहीं है । परंतु ग्रीष्म ऋतु के सवैया १४७ से हैं । इसके बाद तरंग २५ में अन्योक्ति वर्णन है उसमें स्थावरान्योक्ति में हिमालय और मेरु की अन्योक्ति हैं, और सुवर्णान्योक्ति के छप्पय से नहीं है । इसके बाद ग्रंथ अपूर्ण है) साहित्य सिन्धु के इस वर्णन के बाद उन्होंने इसी प्रकार अलंकार कलानिधि, रामसिंह मुखारविन्द, मकरन्द काव्य रत्न, मंडन कृत काव्य सरोज, श्रीपति कृत हनुमत भूषण, प्रस्तार प्रभाकर, फाजल अली प्रकाश, दुषण भ्रांति भंजनी आदि ग्रंथों की प्रतियों का विवरण दिया है ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इतना पूर्ण विवरण कल्पना पर आधारित नहीं हो सकता है, अत: गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा संग्रहीत सामग्री अत्यन्त विश्वसनीय मानी जा सकती है।

गोविन्द गिल्ला भाई के स्फुट कागज पत्रों में यत्र तत्र हिन्दी के प्राचीन ग्रंथों की विस्तृत सूचियां मिलती हैं, उससे भी अनेक अज्ञात ग्रंथ प्रकाश में आ सकते हैं तथा कुछ विवाद ग्रस्त कृतियों से संबंधित विवाद समाप्त हो सकते हैं। उदाहरणार्थ सूर के कूट पदों और उनकी सरदार कृत टीका आज तक हिन्दी के विद्वानों के बीच एक विवाद का विषय है। गोविन्द गिल्ला भाई ने एक स्थान पर न केवल सूर के कूट पदों और उन पर सरदार कवि की टीका उल्लेख किया है परन्तु उनकी निश्चित पद संख्या भी दी है तथा उनके प्रकाशन में कितना खर्च उस समय लग सकता था उसका भी उल्लेख किया है। इस प्रकार इस उल्लेख के आधार पर सूर के कूट पदों और उन सरदार कवि की टीका के अस्तित्व पर अविश्वास नहीं किया जा सकता। गोविन्द गिल्ला भाई के संग्रह को जो सामग्री मिली है उसमें और उनके उल्लेखों में भी एकरूपता तथा समानता मिलती है।

अत: गोविन्द गिल्ला भाई की सामग्री जिस रूप में भी आज उपलब्ध है, हिन्दी शोध की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व का यह पक्ष हिन्दी के शोध छात्रों तथा विद्वानों के लिए आदर्श सिद्ध हो सकता है।

गोविन्द गिल्ला भाई की शोध सम्बन्धी समूची सामग्री का परिचय या अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। अत: उनके कृतित्व के इस पक्ष के संक्षिप्त परिचय के आधार पर उनके कृतित्व का महत्व सिद्ध किया गया है, जिसका आज के युग में बड़ा मूल्य है।

२।५ गोविन्द गिल्ला भाई का संपादन आदि कार्य

आधुनिक हिन्दी आचार्यों को रीतिकालीन आचार्यों से भिन्न सिद्ध करने वाली यह आधुनिक आचार्यों की बड़ी विशेषता है कि उन्होंने साहित्यिक ग्रंथों

का संपादन कर, उनकी भूमिका आदि के रूप में उनकी साहित्यिक समीक्षा भी की है। गोविन्द गिल्ला भाई ने गुजरात में रहते हुए भी यह कार्य किया है तथा अपने ग्रंथों के प्रकाशन के साथ साथ हिन्दी के अन्य कवियों की रचनाओं का भी प्रकाशन किया है। भूषण के ग्रंथ के प्रकाशन एवं संपादन के विषय में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अभिमत पहले उद्धृत किया जा चुका है, इसी प्रकार उनके अन्य प्रकाशनों और संपादन कार्यों के विषय में भी कहा जा सकता है। गोविन्द गिल्ला भाई ने बहुत पहले ही अपनी रचनाओं तथा अन्य कवियों की रचनाओं का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ कर दिया था।[१] उन्होंने आगे प्रकाशन और ग्रंथ संपादन की एक बड़ी योजना बनाई थी, जिसकी सूचना उन्होंने अपने प्रकाशित ग्रंथों के अंतिम पृष्ठों[२] तथा हैन्डबिलों के रूप में छापी थी। परन्तु जितने ग्रंथों का प्रकाशन और संपादन वे करना चाहते थे, नहीं कर सके। कुछ रचनाएं जैसे शिवराज भूषण, ढोला मारू री वार्ता, आदि ऐसी हैं, जिनका संपादन कार्य उन्होंने कर लिया था[३] परन्तु प्रकाशन कार्य वे पूरा न कर सके।

गोविन्द गिल्ला भाई ने जि ग्रंथों का संपादन एवं प्रकाशन किया है, उनकी भूमिका भी लिखी है, जिसमें उन्होंने रचना के लेखक तथा उसकी कृति आदि के विषय में विस्तार से विचार किया है तथा उनके विषय में विभिन्न विद्वानों के मतों को उद्धृत कर उनकी समीक्षा की है, और अपना स्वतंत्र मत व्यक्त किया है। इस दृष्टि से शिवराज शतक की उनकी भूमिका देखी जा सकती है, जिसमें उन्होंने मिश्रबंधु के मत की समीक्षा की है। इतना ही नहीं वे गुजराती की कुछ मासिक पत्र पत्रिकाओं में भी इसी प्रकार के विवेचनात्मक लेख आदि लिखा करते थे। परन्तु आज वे उपलब्ध नहीं हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने समकालीन हिन्दी के आचार्यों के समान हिन्दी साहित्य का प्रकाशन, संपादन

१- देखिए : स्मरण पोथी, पृ० ७, २०, २३ आदि।

२- ,, : गोविन्द ग्रंथमाला, पृ० ४४३, शिवराज शतक, पृ० १२६।

३- ,, : शिवराज शतक, भूमिका, पृ० १२, १३।

तो किया है, उसकी विवेचनात्मक भूमिका तथा लेख आदि लिख कर गुजरात में उन्हें सर्व जन सुलभ भी कराया है । इस प्रकार उन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य के उद्धार में अपना सक्रिय योगदान दिया वरन् गुजरात में आधुनिक हिन्दी की सभी धाराओं का प्रचार भी किया। वस्तुत: वे गुजरात में आधुनिक और रीतिकालीन हिन्दी साहित्य के प्रतिनिधि थे ।

३। उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व रीतिकालीन आचार्यों के कृतित्व से अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है, क्योंकि उन्होंने काव्यशास्त्रीय विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों का भी शास्त्रीय विवेचन किया है । साथ ही अपने युग के प्रभाव के कारण उनके कृतित्त्व में ऐसी अनेक विशेषता देखने को मिलती हैं जो रीति आचार्यों में सम्भव नहीं थी। इसीलिए उनके आचार्यत्व में रीतिकालीन आचार्यों और आधुनिक आचार्यों की अनेकानेक विशेषताओं का इस प्रकार सम्मिश्रण मिलता है कि उनका आचार्यत्व सहज ही विशिष्ट सिद्ध हो जाता है । हिन्दी साहित्य के इतिहास के दो युगों की संक्रमण सीमा होने के कारण गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व में दोनों युगों के आचार्यों की विशिष्ट विशेषताओं का समन्वित रूप में मिलना सहज स्वाभाविक ही है । अत: उन्हें जहां रीति आचार्य कहा जा सकता है, वही उन्हें आधुनिक आचार्य भी कहा जा सकता है । परन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है, गोविन्द गिल्ला भाई मूलत: रीतिकालीन आचार्य थे, आधुनिक विशेषता उनमें अपने समय के प्रभाव के परिणाम स्वरूप ही थी । अत: आधुनिक युग के आचार्यत्व की विशेषताएं उनमें प्रधान रूप में नहीं मिलती तथा जिस रूप में आधुनिक आचार्यत्व की विशेषताओं को सिद्ध करने वाली सामग्री मिलती है उससे भी यही सिद्ध होता है कि गोविन्द गिल्ला भाई की दृष्टि में भी आधुनिक युग की विशेषताएं गौण ही थी । उनकी दृष्टि में शास्त्रीय विवेचन का जो महत्व था वह ग्रंथ संपादन आदि का नहीं था, परन्तु इसे वे आवश्यक मानते थे । इसीलिए उन्होंने इस दिशा में कार्य किया है ।

आशय यह कि मूलत: गोविन्द गिल्ला भाई रीति आचार्य थे, जिन्होंने अलंकार, नायक नायिकादि भेद का प्रधान रूप से तथा काव्यशास्त्र के अन्य विषयों का विवेचन गौण रूप से किया है, परन्तु उनमें अपने युग की अनेक नवीन प्रवृत्तियां भी मिलती हैं, जिन के कारण उनके आचार्यत्व में व्यापकता तथा विशिष्टता आ गयी है, जो रीति और आधुनिक आचार्यों में एक ही साथ दृष्टिगोचर नहीं होती । आचार्यत्व गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व का सर्वाधिक प्रबल, प्रौढ़ एवं सफल पक्ष कहा जा सकता है ।